वर्ष-12 , अंक-40 प्रयागराज, रविवार 06 अक्टूबर 2024 से शनिवार 12 अक्टूबर 2024 तक — पृष्ठ- 8 मूल्यः 3 रूपये

T M

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

हिन्दी साप्ताहिक

Download From Google Play Adhunik Samachar

आधुनिक समाचार नेटवर्क

नगर संस्करण 12 वर्ष विश्वास के

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का 6 अक्टूबर को प्रयागराज दौरा,6 अक्टूबर को सुबह 10 बजे प्रयागराज आएंगे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। मिनट तो मिनट कार्यक्रम हुआ जारी । प्रयागराज में लगभग 6 घंटे रहेंगे मुख्यमंत्री मुख्यमंत्री हेलिपैड से क़िलाघट वीआईपी जेटी से संगम नोज़ के लिए मोटर बोट के द्वार जाएंगे संगम नोज़ पर संगम दर्शन एवं निरीक्षण करेंगे । संगम नोज़ से किलघाट तक मोटर बोट द्वारा और किलघाट से अक्षयवट तक जाएंगे । और अक्षयवट में, पातालपुरी और सरस्वती कूप के दर्शन एवं निरीक्षण करेंगे । अक्षयवट से लेटे हुए हनुमान मंदिर में दर्शन एवं कार्यों का स्थलीय निरीक्षण करेंगे । तत्पश्चात हनुमान मंदिर से परेड मैदान बैठक स्थल के लिए प्रस्थान करेंगे । बैठक में आए संत समाज के लोगों का स्वागत एवं अभिनंदन करेंगे । महाकुंभ 2025 के प्रबंधन एवं व्यवस्थाओं के संबंध में लघु फिल्म के माध्यम से प्रस्तुतीकरण करेंगे । बैठक स्थल में संत समाज एवं अखाड़ा परिषदों के साथ संवाद करेंगे । सभी 13 अखाड़ों के एक-एक पदाधिकारी एवं प्रतिनिधियों से संवाद । खाक चौक परंपरा के दो-दो पदाधिकारी एवं प्रतिनिधियों से संवाद । दंदिबाडा परंपरा के दो-दो प्रतिनिधियों एवं पदाधिकारी से संवाद । आचार्यबाडा परंपरा के दो-दो पदाधिकारी एवं प्रतिनिधियों से संवाद । प्रयागवाल के दो-दो प्रतिनिधियों के साथ संवाद । तत्पश्चात मुख्यमंत्री का उद्बोधन । परेड स्थल से आईसीसीसी सभागार के लिए प्रस्थान ।,आईसीसीसी सभागार में महाकुंभ 2025 के कार्यों की समीक्षा बैठक करेंगे । महाकुंभ 2025 के लोगो का अनावरण करेंगे । महाकुंभ 2025 के वेबसाइट एवं मोबाइल ऐप का अनावरण करेंगे । महाकुंभ 2025 के भूमि सुविधा के एप्लीकेशन का अनावरण करेंगे । तत्पश्चात महाकुंभ 2025 के कार्यों के अद्यावधिक प्रगति का प्रस्तुतीकरण अपर मुख्य सचिव / प्रमुख सचिव द्वारा किया जाएगा । महाकुंभ 2025 के अवसर पर पुलिस द्वारा यातायात एवं सुरक्षा व्यवस्था का प्रस्तुतीकरण किया जाएगा । महाकुंभ 2025 के लिए मंत्रियों एवं जनप्रतिनिधियों के द्वारा सुझाव लिया जाएगा । तत्पश्चात मुख्यमंत्री का संबोधन । आधे घंटे का कार्यक्रम आरक्षित । आईसीसीसी सभागार से भारद्वाज आश्रम के लिए प्रस्थान करेंगे । भारद्वाज आश्रम का स्थलीय निरीक्षण । भारद्वाज आश्रम से आई0ई0आर0टी0 सेतु के पास आगमन एवं स्थलीय निरीक्षण करेंगे अलोपी बाग से नैनी लेप्रोसी रोड से नैनी रेलवे स्टेशन रोड पर प्रस्थान। लेप्रोसी चौराहे से नैनी रेलवे स्टेशन रोड का निरीक्षण करेंगे । नैनी रेलवे स्टेशन रोड से प्रयागराज छिवकी रेलवे स्टेशन के लिए प्रस्थान करेंगे । प्रयागराज छिवकी रेलवे स्टेशन रोड का स्थल निरीक्षण करेंगे । शिव की रेलवे स्टेशन रोड से बेनी माधव अराइवल घाट की तरफ प्रस्थान करेंगे । अरहल घाट स्थित बेनी माधव मंदिर एवं अरेल घाट के दर्शन एवं निरीक्षण करेंगे । तत्पश्चात बेनी माधव मंदिर से परेड ग्राउंड स्थित हेलीपैड पर प्रस्थान करेंगे। हेलीपैड से वापस हेलीकॉप्टर के द्वारा लखनऊ के लिए प्रस्थान ।

रामलीला एक ऐसा मंच है, जिसे पूरे परिवार के साथ बैठकर देख सकते हैं- अनिल सिंह

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नोएडा। श्री राम लखन धार्मिक लीला कमेटी द्वारा शुक्रवार को सेक्टर 46 के रामलीला मैदान में आयोजित दूसरे दिन की रामलीला का शुभारंभ नोएडा विधायक पंकज सिंह के बड़े भाई

अनिल सिंह ने मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद रहकर किया। ताकि हम अपनी पुरानी परंपरा को कायम रख सके।दूसरे दिन की रामलीला में राम जन्म जन्म महोत्सव बड़े ही धूमधाम से आयोजित किया गया ,नन्हे कलाकार द्वारा भगवान राम जी का रोल किया, जिसे देखकर रामलीला देखने आए लोगों ने सराहना की। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में अमित त्यागी, धर्मेंद्र चौहान, महेश अवाना, कार्तिक मिश्रा, राम अवतार सिंह, मदन शर्मा मौजूद रहे। लीला वाचक पंडित कृष्ण स्वामी ने श्री राम जन्म, वशिष्ठ जी द्वारा नामकरण तथा बाल लीला और विश्वामित्र आगमन तथा ताड़का वध और शुभांशु वध की लीला का विस्तार से वर्णन किया।इस अवसर पर आयोजन समिति के अध्यक्ष विपिन अग्रवाल ने आए हुए मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथियों का आभार प्रकट करते हुए उन्हें सम्मानित किया। सती रामलीला देखने आए लोगों का भी आभार प्रकट किया।इस अवसर पर आयोजक समिति के के चेयरमैन मनोज अग्रवाल सीएमडी प्रिया गोल्ड, वाइस चेयरमैन राजेंद्र जैन , वाइस चेयरमैन पूनम सिंह, अध्यक्ष विपिन अग्रवाल , महासचिव गिर्राज अग्रवाल, कोषाध्यक्ष सुशील कुमार सिंघल, पंडित कृष्णा स्वामी, संजय गोयल, आलोक गुप्ता , गौरव कुमार यादव, रामवीर यादव , अशोक गोयल, विकास बंसल , संदीप अग्रवाल, कुलदीप गुप्ता, प्रदीप अग्रवाल,पैं मनोज अग्रवाल,अनुज गुप्ता, मुकेश गुप्ता, अभिषेक जैन, प्रदीप गुप्ता, पीयूष द्विवेदी, शरद कुमार सिंह, पैं राजीव जैन, राहुल गुप्ता , तेजेंद्र मलिक, सौरभ अग्रवाल, रोहिणी नगर, डॉक्टर मनोज अग्रवाल का रामलीला में विशेष सहयोग चल रहा है इस अवसर पर डॉक्टर एसपी जैन, नरेश कुछल, सुनील गुप्ता, सुशील सिंघल, महेश गुप्ता इंदिरापुरम, राकेश सिंगला, जगनेश भारद्वाज , योगेंद्र शर्मा वीरेंद्र गर्ग, महेश चंद्र अग्रवाल, वीके राणा, मूलचंद गुप्ता, सौरभ गोविल, कुलदीप कटियार, राजीव कपूर, सुमित शर्मा, संजीव अग्रवाल, शंकर मोदी ,सुनील जैन , वीके गुप्ता , राकेश गुप्ता , गौरव मित्तल, सौरव मित्तल , असीम जगिया, सत्येंद्र शर्मा आदि मौजूद थे।

धूमधाम से मनाई गई अग्रसेन महाराज की जयंता

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

सोनभद्र । विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी श्री 1008 अग्रसेन जी महाराज की जयंती के शुभ अवसर पर मारवाड़ी युवा मंच सोनभद्र ,मारवाड़ी युवा मंच

सोन महिला शाखा व मारवाड़ी महिला दादी मंडल द्वारा 3 अक्टूबर 2024,दिन गुरुवार को सायं 4:30 बजे राजस्थान भवन में श्री अग्रसेन महाराज की पूजन एवं आरती का कार्यक्रम आयोजित किया गया। सोनभद्र शाखा अध्यक्ष सचिन अग्रवाल ने कहा कि महाराजा अग्रसेन जयंती के दिन अग्रवाल समाज के लोग महाराजा अग्रसेन की पूजा-अर्चना करते हैं और उनके बताए रास्ते पर चलने का प्रयास करते हैं. उन्होंने कहा था कि उनके राज्य में कोई बसना चाहता है तो उसे प्रत्येक व्यक्ति की ओर से एक ईंट मकान के लिए और एक मुद्रा व्यापार के लिए देना चाहिए. महिला मंच की अध्यक्ष प्रतिभा कानोडीया और मारवाड़ी महिला दादी मंडल की अध्यक्ष अनीता थर्ड ने बताया कि श्री अग्रसेन जी महाराज हमेशा ही लोकतांत्रिक व्यवस्था और समानतावाद के पोषक रहे।उनके जीवन के मूल रूप से तीन आदर्श हैं- लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था, आर्थिक समरूपता एवं सामाजिक समानता।कार्यक्रम में मुख्य रूप से विजय कनोडिया पंकज कनोडिया हिमांशु केजरीवाल राकेश जालान रमेश गोयल शुभम अग्रवाल रवि अग्रवाल संस्कार कनोडिया सुयश कानोडिया ऋतु जालान रिंकी जालान अंकिता केजरीवाल ज्योति शर्मा अनीता कनोदिया पूनम खैतान एकता केजरीवाल आदि उपस्थित रहे।

NAINI INDUSTRIAL TRAINING CENTRE

कौशलं बलम्

(Govt. Affiliated, Star Graded, Record Holder, ISO Certified Training Centre)

सर्टिफिकेट इन फायर सेफ्टी एण्ड इण्डस्ट्रीयल सिक्योरिटी

फायर सेफ्टी पर जिसकी कमाण्ड, उसकी ही है ग्लोबल डिमाण्ड

कोर्स के बाद सेफ्टी सुपरवाइजर, फायर प्रोटेक्शन, सिक्योरिटी एडमिनिस्ट्रेटर आदि विभिन्न पदों पर नियुक्ति मिल जाती है।

रिलीफ एजेन्सी N.G.O., डिफेन्स सर्विसेज फायर सर्विस आर्डिनेन्स फैक्ट्री, महानगर पालिका, नगर निगम, एयरपोर्ट, पावर प्लांट, स्टील प्लान्ट, माइनिंग इन्डस्ट्रीज,पेट्रोलियम कम्पनी, फूड इण्डस्ट्रीज, रिफाइनरीज, टेक्सटाइल मिल, टावर कम्पनी, इलेक्ट्रानिक कम्पनी, कोयले की खदानों एवं जहाजों आदि क्षेत्रों में फायर सेफ्टी के जानकारों को बहुत अधिक मौका मिलता है

(वरिष्ठ आई.पी.एस.) श्री अविनाश चन्द्रा
महानिदेशक
अग्निशमन सुरक्षा एवं आपात सेवा उत्तर प्रदेश

नोटः फायर सेफ्टी कोर्स करें और देश -विदेश, सरकारी और प्राइवेट क्षेत्रों में अच्छे पैकेज के साथ नौकरी पायें।

Visit us at www.nainiiti.com Call: 9415608710, 7459860480

Enjoy Publicity

प्रयागराज बहराना की रामलीला

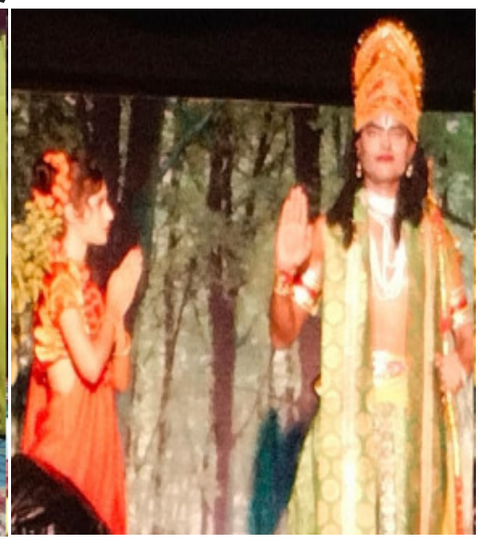

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
प्रयागराज। प्रयागराज बहराना की रामलीला में अहिल्या उद्धार का दृश्य रहा सबसे अच्छा और सोना ने अहिल्या उद्धार के रोल में बहुत ही अच्छी भूमिका निभाई जिसको की देखकर दर्शकों की तालिया की गड़गड़ाहट से शमा बन गया और सभी दर्शकों ने सोने के कलाकारी की तारीफ की। और उसी के साथ-साथ कैंकई के रोल में रचना त्रिवेदी पत्रकार की भी दर्शकों ने बहुत तारीफ की और तालिया से स्वागत किया और कहते ही रोल निभा रही रचना त्रिवेदी को कहा कि उनकी एक्टिंग सभी कलाकारों से बहुत ही अच्छी और बहुत ही खूबसूरत थी जिसकी वजह से दर्शकों ने बार-बार उद्देश्य को देखने की मांग की। अहिल्या और कैंकई ने पूरे क्षमता को बांधकर रख दिया और इन्हीं दोनों कलाकारों की वजह से पूरी रामलीला की रौनक बढ़ गई।

भाजपा सरकार में दलित उत्पीड़न कब होगा बंद:आप

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
सोनभद्र ।दलित उत्पीड़न की घटनाएं कम नहीं हो रही है! आदिवासी दलित

के साथ मारपीट कर पेशाब करने की दूसरी घटना है। आज 5 दिन पुरानी शक्तिनगर थाना क्षेत्र की घटना सोसल मीडिया से पता चला कि सोनभद्र में दर्जन भर मनबढ़ो ने दलित युवक को बेरहमी से पीटा, उसके बाद घायल युवक के ऊपर किया पेशाब, वीडियो वायरल किया गया। घटना के संबंध में गुरुवार को जिलाध्यक्ष रमेश गौतम के साथ आम आदमी पार्टी के स्थानीय कार्यकर्ता शक्तिनगर थाना में थानाध्यक्ष कुसुम शेखर सिंह द्वारा राज्यपाल के नाम एक ज्ञापन सौंपा राज्यपाल को संबोधित पत्र में कहा गया है,सोनभद्र सहित उत्तर प्रदेश में दलितों, पिछड़ों पर हो रहे हिंसा,अत्याचार और अमानवीय कृत्य के प्रति कठोर कार्यवाही करने की आवश्यकता है, इसमें किसी जाति धर्म विशेष को देखकर कार्यवाही नही होनी चाहिए। सोनभद्र के शक्तिनगर थाना क्षेत्र के अंतर्गत एक दलित युवक के साथ अमानवीय व्यवहार का मामला सोसल मीडिया के माध्यम से सामने आया है. बताया जा रहा है पीड़ित पवन खरवार पर कुछ लोगों ने कथित तौर पर मारपीट की और उसके ऊपर पेशाब किया. इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया, जिसके बाद पुलिस हरकत में आई. पुलिस ने इस मामले में एक आरोपी अंकित भारती को गिरफ्तार कर लिया है। जिलाध्यक्ष रमेश गौतम ने कहा जिले में इस तरह की अन्य घटनाएं भी हो चुकी हैं, चाहे चप्पलों पर थूक कर चटवाने की घटना हो, या कान में पेशाब करने का मामला है। इसके लिए कोई एक जाति वर्ग दोषी नहीं है। कुछ राष्ट्र, समाज विरोधी ताकतें और दबंग किस्म के लोग हैं। जिनको सत्ता सरकार का संरक्षण भी प्राप्त है, जिसके कारण ऐसे अमानवीय कृत्य करने से डरते नही है। इसलिए राज्यपाल महोदया से आग्रह है सोनभद्र सहित प्रदेश के अन्य जनपदों में भी दबंगों को कानून और पुलिस का भय नहीं है। यह चिंताजनक है। अभी दो दिन पहले फतेहपुर में सरस्वती विद्या बाल मंदिर इंटर कॉलेज खागा में शोषित समाज की प्रतिभाशाली छात्रा प्रिया मौर्या ने दबंगों से छेड़ छाड़ से तंग आकर कॉलेज के तीसरे मंजिल से कूदकर आत्म हत्या कर ली। दोषी अभी भी बेखबर घूम रहे हैं।ऐसे घटनाक्रमों से जहां कानून व्यवस्था पर सवाल खड़े होते हैं, वही देश के संविधान और लोकतंत्र के लिए हानिकारक है।दोषियों के खिलाफ त्वरित कार्यवाही हो। चाहे वे किसी जाति, धर्म या वर्ग के हो। आज ज्ञापन देने में वरिष्ठ जिलाउपाध्यक्ष संतोष त्यागी,यूथ विंग प्रदेश उपाध्यक्ष प्रकाश चौरसिया,जिला सचिव डॉ मनोज वैश्य,अनपरा नगर अध्यक्ष मनमोहन वैश्य,शक्तिनगर अध्यक्ष परमेश्वर कुशवाहा, यूथ विंग जिला उपाध्यक्ष सुभम मिश्रा,यूथ प्रदेश सचिव राकेश कुमार,पवन शर्मा शामिल रहे।

सोनभद्र है धर्म और आध्यात्म की है सांस्कृतिक नगरी इसके बिना धर्म की कल्पना अधूरी- परम पूज्य संत श्री मिथिलेशनन्दिनीशरण

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
सोनभद्र ।:शनिवार को सोनभद्र एकदिवसीय प्रवास कार्यक्रम पर पहुंचे धर्माचार्य आध्यात्मिक एवं दार्शनिक विचारक सिद्ध पीठ श्री हनुमन्निवास अयोध्या धाम के परम पूज्य संत श्री मिथिलेशनन्दिनीशरण महाराज ने कहा कि सोनभद्र धर्म और आध्यात्मिक सांस्कृतिक नगरी है। सोनभद्र के बिना धर्म की कल्पना अधूरी है। सोनभद्र मानव जीवन के आध्यात्म क्षेत्र में धर्म का केंद्र है तो वही जीविकोपार्जन के लिए अर्थ नगरी है यह वही सोनभद्र है जहां अंत्योदय की कल्पना से लेकर ऋषियों एवं मुनियों के तपोस्थलीय तक के लिए विश्व के मानस पटल पर सूर्य के समान रोशनी और चंद्र के समान शीतलता प्रदान करता है।सोनभद्र सेवा और समर्पण का केंद्र है।यहां यदि बालू रेतीले वाले मैदान है तो पहाड़ियां भी है वहीं दूसरी तरफ कृषि योग्य भूमि यही कारण रहा है कि यह संत भूमि कहलाई है।सोनभद्र जिसका सीमांकन सोन नद करता है यह जिला 11 वीं से 13 वीं शताब्दी के दौरान दूसरी काशी के रूप में प्रसिद्ध था. सोनभद्र भारत का एकमात्र जिला है जो मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ झारखंड और बिहार

के चार राज्यों से घिरा है. कौन बनेगा करोड़पति के टीवी शो में पूछा जाने वाला जिला सोनभद्र के पावन पवित्र धरा पर अनेकों भित्ति चित्र, शिव/बड़ा देव उपासकों के द्वारा स्थापित प्राचीन शिव मंदिर, मां आदि शक्ति उपासकों के द्वारा स्थापित प्राचीन देवी मंदिर, प्राकृतिक झरने,सोन-रेणु-बिजुल-घाघरा-कर्मनासा-रिहंद-कनहर-बेलन नदियों के किनारे अत्यधिक सुंदर पर्यटन स्थल,बड़े-बड़े बाँध जैसे गोविंद बल्लभ पंत सागर उर्फ रिहंद बाँध-कनहर बाँध-नगवा बाँध -धंधरौल बाँध-ओबरा बाँध , वनों में स्थित छोटे-छोटे चुआँड, घनघोर वनों में स्थित बड़ी-बड़ी चट्टानें-गुफाएं, फॉसिल्स पार्क, बॉक्साइट-चूना पत्थर-डोलोमाइंस पत्थर-कोयला-सोना आदि जैसे बहुत सारे खनिज सम्पदाओ से परिपूर्ण ऊंची ऊंची पहाड़ियां,नदियों के रेतीले मैदान, किले जैसे अगोरी किला-विजयगढ़ किला -सोढरीगढ़ किला,कैमूर वन्यजीव अभयारण्य जहां आज भी काले हिरण विचरण करते हैं,बड़े-बड़े औद्योगिक घराने जैसे विंध्याचल थर्मल पावर स्टेशन- रिहंद थर्मल पावर स्टेशन- बिजलीघर अनपरा -बिजलीघर ओबरा - हिंडाल्को हाइड्रो -पिपरी हाइड्रो -एनसीएल कई कोयला खदानें -हिंडाल्को प्रमुख एल्युमीनियम संयंत्र -डाला सीमेंट फैक्ट्री -चुर्क सीमेंट फैक्ट्री -आदित्य बिड़ला केमिकल्स -हाई-टेक कार्बन -कनोरिया केमिकल्स पावर प्लांट -लैंको अनपरा पावर लिमिटेड है भारत के एकमात्र इसी जनपद में इस प्रकार का समुच्चय स्थित है।

किसान सम्मान निधि की 18 वी किस्त जारी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
रामगढ़,सोनभद्र। को विकास खंड परिसर चतरा के माननीय प्रधान मंत्री के द्वारा प्रधान मंत्री किसान सम्माननिधि योजना की 18 वी क़िस्त जारी करने का लाइव प्रसारण एवम राष्ट्रीय कृषि विकास योजनान्तर्गत स्वायल हेल्थ एंड फर्टिलिरी कार्यक्रम के अंतर्गत कार्यक्रम खंड विकास अधिकारी लालजी शुक्ल के अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में सहायक विकास अधिकारी (कृषि) राकेश कुमार द्वारा कार्यक्रम में आये हुए कृषको को मृदा परीक्षण के लाभों, जैविक खेती, परंपरागत खेती, कृषि यंत्रीकरण, प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना, बीजो पर अनुदान जैसी सभी योजनाओं के बारे में कृषको को विस्तृत जानकारी दी गयी इस अवसर पर ब्लॉक तकनीकी प्रबंधक संजय सिंह द्वारा कृषको का स्वागत किया गया एवम कृषि विभाग में चलाई जा रही योजनाओं के बारे में बताया गया अंत मे उपस्थित कृषको को खंड विकास अधिकारी द्वारा आये कृषको को वैज्ञानिक एवम जैविक खेती करने के लिए आग्रह किये इस औसर पर कृषकों को सरसों के निःशुल्क बीज मिनिकिट वितरण किया गया कार्यक्रम में कृषि विभाग के मुरली मनोहर सिंह , अरविंद सिंह, सौरभ सिंह, आशिमा सिंह, नरेंद्र पाल, आदर्श सिंह एवम कृषक सुदर्शन सिंह, अशोक सिंह , सुरेश प्रसाद , जयप्रकाश सिंह के साथ लगभग 153 कृषक उपस्थित थे जो माननीय प्रधान मंत्री एवं कृषि मंत्री जी को सुन अत्यंत प्रसन्न हुए।

ऑल इंडिया वेयरहाउसिंग कार्पोरेशन ईम्प्लाइज यूनियनठ की प्रेस कॉन्फ्रेंस फैजाबाद रोड, लखनऊ स्थित एक होटल में आयोजित की गई

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
लखनऊ। दिनांक 4 अक्टूबर 2024 को हमारी यूनियन ठऑल इंडिया वेयरहाउसिंग कार्पोरेशन ईम्प्लाइज यूनियनठ की प्रेस कॉन्फ्रेंस फैजाबाद रोड, लखनऊ स्थित एक होटल में आश्वासन दिया गया जिसकी आगे की कार्यवाही दिनाँक 18 अक्टूबर से प्रारंभ की जाएगी साथ ही उप-श्रमायुक्त लखनऊ द्वारा 9 अक्टूबर तक यूनियन से तकरीबन 7 जिलों के 19 डिपो के श्रमिकों की सूची की

आयोजित की गई, जिसमें उत्तर प्रदेश भंडारण निगम के कार्यरत श्रमिकों के कल्याण हेतु यूनियन द्वारा किए गए सार्थक प्रयासों की चर्चा की गई। यूनियन के राष्ट्रीय महामंत्री एस. के. पाण्डे ने पत्रकारों से बताया कि हम लगातार कई वर्षों से श्रमिकों के हित की लडाई लड़ रहे हैं उसी का परिणाम ये है कि वित विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा पुराने श्रमिकों के कार्य करने के कार्य दिवस के अनुसार उनको अवशेष वेतन का भुगतान का मांग की गई है ताकि उस सूची पर आगे की कार्यवाही की जा सके। इस अवसर पर यूनियन के उत्तर प्रदेश कमेटी के नव नियुक्त पदाधिकारियों की घोषणा की गई, कमेटी में अध्यक्षा नीशू शुक्ला गिल, उपाध्यक्ष रोहिल कुमार, महामंत्री प्रवीण कुमार, संयुक्त मंत्री शैलेन्द्र कुमार, संगठन मंत्री राम रहीश, कार्यालय सत्री विजय कुमार, प्रचार मंत्री राकेश कुमार, कोषाध्यक्ष विवेक शर्मा बनाए गए।

बालिक बेटियों का नाम मतदाता सूची में जुड़वाने का आवाहन कर रहे पतविंदर सिंह

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नैनी प्रयागराज। कन्या भ्रूण हत्या से देश में स्त्री और पुरुष के बीच बिगड़ते संतुलन पर भारतीय जनता पार्टी अल्पसंख्यक मोर्चा काशी क्षेत्र क्षेत्रीय उपाध्यक्ष सरदार पतविंदर सिंह ने नैनी क्षेत्र के मोहल्ले विभिन्न गांव-गांव-कालोनियों-वाडो में बेटी पढ़ाओ,बालिक बेटियों का नाम में कन्या भोज के बगैर अनुष्ठान पूरा नहीं होता सतमी से लेकर नवमी तक उन घरों में महिलाएं दस्तक देने लगती हैं जहां कन्या होती हैं तीन दिन कन्या इतनी व्यस्त होती हैं कि भोजन खिलाने के लिए उनके पीछे पीछे लोग दौड़ते रहते हैंत संजय श्रीवास्तव ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी अल्पसंख्यक मोर्चा काशी क्षेत्र क्षेत्रीय

मतदाता सूची में जुड़वाएं नारी सम्मान और नारी सुरक्षा हम सब की प्राथमिकता है बहन-बेटियां शिक्षा और युद्ध कौशल प्राप्त कर बहादुर बने स्लिम बनने की अपेक्षा सबल बनना होगा कोशल ने कहा कि कन्या दो परिवारों को यशस्वी बना सकती है आत्म कल्याण की दृष्टि से तो कन्या देवी साक्षात मूर्ति है उसके नाम के साथ देवी शब्द को जोड़ा भी जाता है कन्या ही देश का भविष्य है वे संस्कारवान और सद्गुण से नए युग का अभ्युदय कर सकती हैं पूजनीय माता दलजीत कौर ने कहा कि नवरात्र उपाध्यक्ष सरदार पतविंदर सिंह द्वारा यह मुहिम चलाकर बहुत ही सराहनीय कार्य किया जा रहा है लेकिन गैर कानूनी कार्य में अल्ट्रासाउंड सेंटर का संचालक महिला डॉक्टर और स्टाफ नर्स की बराबर की भागीदारी होती है दिखाने के लिए सभी अल्ट्रासाउंड सेंटरों पर एक बोर्ड लगाकर लिंग परीक्षण गैरकानूनी होने की बात लिखी रहती है परंतु इसका पालन नहीं किया जाता अभियान में सरदार पतविंदर सिंह,संजय श्रीवास्तव,हरमान सिंह,कोशल,दलजीत कौर आदि रहे।

शक्ति, भक्ति और सत्य की विजय का प्रतीक है श्री राम का चरित्र - डॉ डी.के. गुप्ता

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
नोएडा।नोएडा सेक्टर 62 रामलीला मैदान में गुरूवार को श्रीराम मित्र मंडल नोएडा रामलीला समिति द्वारा श्रीरामलीला महोत्सव का शुभारंभ हुआ। जिसमें फेलिक्स हॉस्पिटल के चेयरमैन डॉ डी.के. गुप्ता एवं सांसद डॉ महेश शर्मा मुख्य अतिथि रहे । आदर्शों को हमारे जीवन में उतारने का अवसर है। रामायण की कथा हमें सिखाती है कि मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने कैसे धर्म, सच्चाई और मानवता के सिद्धांतों का पालन करते हुए अपने जीवन को उच्चतम आदर्शों का प्रतीक बनाया। उनका जीवन हमें

इस मौके पर श्रीराम मित्र मंडल नोएडा रामलीला समिति के चेयरमैन उमाशंकर गर्ग, अध्यक्ष धर्मपाल गोयल एवं महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा व संस्था के पदाधिकारियों द्वारा मुख्य अतिथियों को स्मृति चिन्ह प्रदान कर और अंगवस्त्र ओढ़ाकर स्वागत किया गया। डॉ डी.के. गुप्ता ने कहा कि दशहरा केवल एक पर्व नहीं है, बल्कि यह शक्ति, भक्ति और सत्य की विजय का प्रतीक है। यह समय हमें याद दिलाता है कि अंधकार और अधर्म के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए हमें अपने भीतर की शक्ति को जागृत करना चाहिए। रामलीला, जिसे हम प्रतिवर्ष बड़े उत्साह के साथ देखते हैं, केवल एक नाटक नहीं है, बल्कि हमारे आराध्य श्रीराम के सिखाता है कि सत्य, सेवा और त्याग का मार्ग ही सच्ची विजय का मार्ग है। आदरणीय सांसद डॉ महेश शर्मा ने बताया की अभी पर्वों का समय और हर पर्व हमे कुछ न कुछ प्रेरणा देता है जैसे नवरात्र के दौरान हम देवी दुर्गा की पूजा करते हैं, जो शक्ति का स्वरूप हैं और उसके बाद दशहरा अच्छाई पर बुराई की जीत को बताता है । हमें उनसे प्रेरणा लेकर अपने भीतर के भय, आलस्य और नकारात्मक विचारों का नाश करना चाहिए। रामलीला का मंचन हमें इस बात की याद दिलाता है कि जीवन में कितनी भी कठिनाई क्यों न हो, सत्य और धर्म का मार्ग हमेशा विजय दिलाता है।

बिटिया प्रिया मौर्या के हत्यारों के खिलाफ कैंडल मार्च:— सोनभद्र में कैण्डल मार्च निकाल कर उठाई गई न्याय की माग

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
सोनभद्र । सोनभद्र के ब्लॉक व थाना करमा क्षेत्र के पगिया रोड में समाज सेवी और आम आदमी पार्टी के संयुक्त जिला महासचिव जसवन्त सिंह मौर्या जिसके बाद से देश के सबसे बड़े सूबे में हलचल तेज हो गई, समाजसेवी जसवन्त सिंह ने कहा कि बिटिया ने आत्म हत्या नही की है बल्कि अपने मान स्वाभिमान के लिए अमानवीय घटनाएं घटती हैं,फिर प्रदेश की महिलाए जाए कहा मुख्यमंत्री जी ने कहा था की महिलाओं के साथ छेड़ छाड़ करने वालो को अगले चौराहे पर यमराज दिखेंगे फिर अब कहा

के नेतृत्व में सैकड़ो की संख्या में स्थानीय लोगो ने इकट्ठे हो कर बिटिया के लिए शांति पाठ कर पैदल मार्च कर विधिक न्यायिक कार्यवाही की भी मांग किए,जैसा कि समाचारों के माध्यम से पता चला है, फतेहपुर में सरस्वती विद्या बाल मंदिर इंटर कॉलेज खागा में शोषित समाज की एक प्रतिभावान छात्रा प्रिया मौर्या को आत्महत्या के लिए विवश किया गया और वह तीन मंजिला कालेज के ही छत से कूद कर आत्महत्या कर ली शहादत दी हैं,जब भी शोषितो के मान पर आंच आया हैं तब पूरा समाज लडा लेकिन स्वाभिमान पर आंच नहीं आने दिया।आज पूरा समाज बिटिया के न्याय के लिए खड़ा हैं। साथ ही बस के ड्राइवर,और कालेज के प्रधानाचार्य की जांच कर कठोर से कठोर सजा देने की बात कही,ताकि प्रदेश में पुनः एसी अप्रिय घटना किसी बिटिया के साथ न घटे,आज उत्तर प्रदेश में महिलाएं बस में सुरक्षित नही हैं,आए दिन किसी न किसी के साथ गए यमराज और ये बुलडोजर अब शांत क्यों हैं..?क्या न्याय के लिए दोहरा मापदंड अपनाया जाएगा उत्तर प्रदेश में। इस सभा में जसवन्त सिंह संयुक्त जिला महासचिव आम आदमी पार्टी सोनभद्र,शैलेंद्र कुमार मौर्य जिला उपाध्यक्ष आप,चंद्रशेखर मौर्य,घनश्याम सिंह,मुलायम मौर्य स्वारथ मौर्य, सुभाष मौर्य,जियाउद्दीन मनीष मौर्य,बेचू मौर्य भंवरी मौर्य पंडित जी समेत सैकड़ो की संख्या में लोग मौजूद रहे।

वीरांगना रानी दुर्गावती की 500 वी जयंती समारोह सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
सोनभद्र ।स्वामी विवेकानंद प्रेक्षागृह में वीरांगना रानी दुर्गावती की 500 वी जयंती समारोह का आयोजन शनिवार को सेवा भारती समिति के द्वारा कर शुभारंभ किया अपने संबोधन में मुख्य वक्ता और मुख्य अतिथि ने कहा कि रानी दुर्गावती का जन्म 5 अक्टूबर 1524 में कालिंजर दुर्ग में चंदेल राजा कीरतपाल के यहां हुआ था बचपन

आयोजित किया गया। कार्यक्रम अपनें निर्धारित समय 2 बजे से प्रारंभ हुआ सर्वप्रथम रानी दुर्गावती के चित्र पर मुख्य अतिथि पुष्पराज सिंह विभाग संचालक सीधी मुख्य वक्ता प्रकाश उईके पूर्व न्यायाधीश और विहिप के केन्द्रीय मंत्री अमरीश ने दीप प्रज्वलित से ही होनहार रही और युद्ध की कला में निपुण होने लगी 1548 में पिता की मृत्यु हो गई और उनका अंतिम संस्कार मध्य प्रदेश के जबलपुर जिले के पहाड़ी पर किया गया।और उसके पश्चात रानी दुर्गावती ने राज्य की जिम्मेदारी सम्भाली दुर्गावती का छोटा भाई वीर नारायण भी था। उसके पश्चात अकबर ने महारानी दुर्गावती को संदेश भेजा कि वह अपने महामंत्री आधार कायस्त और मान ब्राह्मण और श्रवण हाथी को मुझे दे दो नही तो मुझसे युद्ध करना पड़ेगा। लेकिन रानी ने युद्ध स्वीकार किया और छोटी सेना लेकर अकबर के सेनापति असफ खां से युद्ध किया और दुश्मन के हाथ न पकड़े जाये और अपने खंजर से स्वयं को समाप्त कर वीरगति को प्राप्त हुई । 24 जून 1565 युद्ध उसके पश्चात अकबर ने दलपत शाह के छोटे भाई चन्द्र शाह को गढ़ा मंडला जो जबलपुर जिले में मौजूद था वहां का राजा बना दिया। और रानी दुर्गावती का साम्राज्य समाप्त हो गया। कार्यक्रम में आर्यन स्कूल और विन्ध कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने रानी दुर्गावती पर नाट्य रूपांतरण प्रस्तुत किया और सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया सेवा भारती के अध्यक्ष विजय जैन चित्रा जालान, रूबी प्रसाद, अंजलि विक्रम,अवध,नीरज ,शिव प्रकाश, डॉ धर्मवीर तिवारी, शीतल सिंह, गंगासागर दुबे, कृष्ण मुरारी आदि लोगों की उपस्थिति रही।

पूर्व पत्रकार एवं मैलहन रामलीला के निदेशक का निधन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
फूलपुर। मैलहन के चकशहाबुददीन उर्फ चिटहां गांव निवासी पूर्व पत्रकार एवं मैलहन की श्री रामलीला कमेटी के निदेशक उमाकांत पांडेय बनारसी का शनिवार को प्रयागराज के एक चिकित्सालय में इलाज के दौरान आकस्मिक निधन हो गया। क्षेत्र के जाने-माने पत्रकार बनारसी पांडेय धार्मिक ज्ञान विशेषतया रामलीला मंचन का ज्ञान बहुत था। मैलहन की श्री रामलीला कमेटी के डायरेक्टर भी थे जो पूरी रात पात्रों की पर्दे के पीछे से उनके पाठ अदा करने में मदद करते थे, कभी किसी पुरुष या महिला पात्र की कमी पड़ती थी तो वें स्वयं वैसा ही ड्रेस धारण कर स्टेज पर आ जाते थे।

जल निगम की लापरवाही से पीडीए कालोनी में पानी न मिलने से ए ब्लाक कॉलोनी में त्राहि त्राहि मची है

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
प्रयागरजा। जे ई एस पी सिंह से वार्ता करने से भी कोई लाभ नहीं हो पाया तथा उनसे बात करने पर वह सही जवाब नहीं दे रहे हैं और ऊपर आल्हा अफसर से बात करने को भी मना कर रहे हैं एस पी सिंह अपनी जिम्मेदारी सही ढंग से नही निभा रहे हैं ना ही कोई किसी बड़े अफसर से बात कर कर समस्या का समाधान कर रहे हैं जिससे कॉलोनी में लोगों को पानी की समस्या से जूझना पड़ रहा है यह सरकार की नाकामी है पानी का बिल जमा करने के बावजूद भी अगर जनता को पानी ना मिले तो उसकी जिम्मेदार सरकार होगी तथा और जो अफसर हैं वह अपनी जिम्मेदारियो को सही ढंग से नहीं निभा रहे हैं तथा इस समस्या को कॉलोनी वाले काफी दिनों से झेल रहे हैं जो कि जल निगम की लापरवाही का नतीजा सरकार से जनता उनकी समस्या का समाधान करने को जल नीगम मे एसपी सिंह को शिकायत दर्ज भी कराया अभी तक कोई कार्यवाही नही हूई है ।

दबंगों ने किया दलित युवक के घर में घुसकर जानलेवा हमला युवक की हालत गंभीर

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)
प्रयागराज। प्रयागराज थाना थरवई क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम सभा खेवराजपुर

में बीती रात लगभग 10 बजे सूरज भारतिया पुत्र स्वर्गीय अवधेश भारतिया अपने पुश्तैनी घर के सामने अपनी चारपाई परबैठा था कि इतने में घर के सामने कुछ मोटरसाइकिल व उन पर सवार जिसमें लोधे यादव पुत्र गोपी यादव ,समर बहादुर यादव ,बृजेश यादव पुत्र समर बहादुर यादव ,हरिकेश यादव पुत्र समर बहादुर यादव ,अवधेश यादव पुत्र समर बहादुर यादव ,अपने साथी सहोदरों के साथ हाथ में लाठी डंडा बरक्षी आदि को लेकर मां-बहन को भद्दी भद्दी जाति सूचक गालियां देते हुए आक्रामक ढंग से एका एक सूरज भारतीय के ऊपर टूट पड़े व मारने पीटने लगे घर के अंदर से ही सूरज की भाभी सरिता देवी ने शोर मचाया तो आक्रामक दबंगों ने घर में घुसकर सरिता देवी को भी मारा पीटा मारपीट की चिल्लाहट को सुनकर पड़ोसी विष्णु भारतीय पुत्र चंद्रेश भारतीय व बगल में सो रही सीमा देवी पत्नी सूरज भारतीय जो अभी लगभग 8 महीने से गर्भवती है बीच बचाव करना चाहा तो दबंगों ने उसे भी मारा पीटा जिससे विष्णु व सीमा को गंभीर चोटे आई घर वालों की चीख पुकार को सुनकर गांव वाले जब इकट्ठा होकर दबंग को दौड़ाया तो घटनास्थल पर ही दबंगों ने लाठी डंडा बरक्षी मोटरसाइकिल ळइ् 70 पि0764 को घटनास्थल पर ही छोड़ कर भाग गए मामले की सूचना डायल 112 नंबर पुलिस को दी गई तो डायल 112 पुलिस ने घायलों को तहरीर के लिए थाने जाने को कहा घायलों को लेकर उनके परिजनों ने थाने पहुंचकर अपनी तहरीर थाना थरवई पुलिस को दिया थाना हाजा की पुलिस ने मामले को संज्ञान में लेते हुए घायलों को मेडिकल के लिए सामुदायिक चिकित्सालय बहरिया भेज दिया सामुदायिक चिकित्सालय बहरिया में रात के समय चिकित्सकों की न मौजूदगी में घायलों का मेडिकल नहीं हो सका इस सूरत में घायलों को किसी निजी अस्पताल का सहारा लेना पड़ा

टेलर के चपेट में आने से स्कूटी सवार एक की मौत दो गंभीर

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
डाला सोनभद्र। स्थानीय चोपन थाना क्षेत्र के अंतर्गत गुरमुरा वाराणसी शक्ति

नगर मार्ग पर टेलर वाहन के चपेट में आने से तीन स्कूटी सवार में से दो की हालत गंभीर एक ही मौके पर हुई मौत प्राप्त जानकारी अनुसार के अनुसार मंगलवार को देर शाम लगभग छः बजे चोपन थाना क्षेत्र के अंतर्गत गुरमुरा काली मंदिर मोड़ के पास वाराणसी शक्ति नगर राज्य मार्ग पर डाला के तरफ से एक स्कूटी पर तीन लोग सवार होकर जा रहें थे उसी दौरान ट्रेलर ने धक्का मारते हुए घटना स्थल भाग निकला जिसको स्थानीय लोग व राहगीरों ने पिछा कर ट्रेलर को मालो घाट टोल टैक्स के पास पकड़ लिया वहीं घटना में मृतक हिरा उम्र लगभग 35 वर्ष पुत्र धनपाल खरवार निवासी सलईबनवा पश्चिम मौके पर ही मौत हो गई बताया जा रहा जहा सूचना पाकर मौके पर पहुंची चोपन थाना की पुलिस व डायल 112 ने घायल विरेन्द्र उम्र लगभग 35 वर्ष पुत्र राम राज निवासी सलईबनवा एव अमर सिंह उम्र लगभग 40 वर्ष पुत्र रामप्रसाद निवासी कैम्हापान कोटा दोनों घायलों को एंबुलेंस से चोपन अस्पताल भेजवाया गया साथ ही मृतक को मौके पर मौजूद चोपन पुलिस अग्रीम कारवाई में जुटी रही।

वृद्धाश्रम छपका में वृहद स्तर पर निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर एवं जन-जागरूकता

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। मंगलवार को वृद्धाश्रम छपका राबर्ट्सगंज में वृहद स्तर पर निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर एवं जन-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक में मुख्य अतिथि जाग्रती अवस्थी, मुख्य विकास अधिकारी , डा0 अश्वनी कुमार मुख्य चिकित्साधिकारी महोदय, डा0 प्रेमनाथ अपर मुख्य चिकित्साधिकारी नोडल एन0सी0डी0, डा0 गुलाब शंकर यादव अपर मुख्य चिकित्साधिकारी, डा0 सुमन जायसवाल उप मुख्य चिकित्साधिकारी, राहुल कुमार कन्नौजिया, फाइनेन्स कम लॉजिस्टिक कंसल्टेंट एन0सी0डी0, आदि के द्वारा प्रतिभाग किया गया। उक्त कार्यक्रम में मुख्य विकास अधिकारी का स्वागत करते हेतु कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। मुख्य विकास अधिकारी द्वारा, कार्यक्रम के दौरान वृद्धजनो को फल, कपडा आदि का वितरण किया गया। वृद्धजनो का आयुष्मान कार्ड बनवाने एवं समस्त वृद्धजनो का समय-समय पर जॉच कराने हेतु कहा गया। उक्त कार्यक्रम में डा0 निधि सीनियर प्रोफेसर नाक, कान गला रोग विशेषज्ञ, मेडिकल कालेज सोनभद्र, डा0 गणेश प्रसाद जनरल फिजिशियन, एन0सी0डी0, श्वेता सिंह स्टाफ नर्स, सपना कन्नौजिया, स्टाफ नर्स, अभिमन्यू राय, एल0टी0, अवनीश कुमार मिश्रा, काउन्सलर, एन0सी0डी0, मंजू स्टाफनर्स, महेन्द्र कुमार, स्टाफ नर्स एन0पी0एच0सी0ई0, पूजा पिप्पल,

साइकाइट्रिक नर्स, एन0एम0एच0पी0, पारसनाथ, आप्टोमेट्रिस्ट जिला संयुक्त चिकित्सालय, ओमकेश आप्टोमेट्रिस्ट, पी0एच0सी0 चतरा, डा0 अन्जनी दूबे, डा0 अरविन्द सिंह, नितेश साहू फिजियोथेरेपिस्ट आर0बी0एस0के0 टीम प्रा0स्वा0 केन्द्र ककराही द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर कैंप का आयोजन किया। उक्त कैम्प में कुल 250 व्यक्तियो द्वारा प्रतिभाग किया गया। जिसमें कुल 150 व्यक्तियों एवं वृद्धजनो का हाईपरटेंशन एवं डायबिटीज का जॉच किया गया। 15 व्यक्तियों का कान की जाँच एवं 25 व्यक्तियों का नेत्र परीक्षण किया गया जिसमें 12 मरीज कैटरेक्ट के पाये गये जिन्हे जिला अस्पलात हेतु रेफर किया गया।

हिंडाल्को रेनुकूट से गबन किया हुआ 31 लाख रुपए का एल्युमीनियम इंगट 10 टन पकड़ाया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। थाना पिपरी पर लिखित प्रार्थना पत्र दिया गया कि हिन्डाल्को कम्पनी का माल एल्यूमिनियम कुल भार 29.825 मिट्रिक टन कीमत

9175051 रुपया है जो दिनांक-31.07.2024 को वाहन संख्या व्02 ँ 5761 पर लोड कर हिन्डाल्को रेनुकुट से जे0एस0डब्लू स्टील लिमिटेड डोल्वी महाराष्ट्र भेजा गया था, उपरोक्त ट्रक युनुस अंसारी पुत्र अब्दुल रसीद निवासी पोस्ट जरवा, थाना जरही, जनपद हजारीबाग (झारखण्ड) के नाम से पंजीकृत है । जो एल्यूमिनियम माल को डोल्वी महाराष्ट्र भेजा गया था अभी तक माल पहुंचा नही, रास्ते में वाहन स्वामी की साजिश से वाहन चालक द्वारा गायब कर दिया गया है । उक्त घटना के सम्बन्ध में थाना पिपरी पर मु0अ0सं0-119/2024 धारा 316(3), 318(4), 61(2), 319(2), 338, 336(3), 340(2) बीएनएस का अभियोग पंजीकृत किया गया । उक्त अभियोग के अनावरण, अभियुक्तो की गिरफ्तारी व माल बरामदगी हेतु पुलिस अधीक्षक जनपद सोनभद्र द्वारा अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय व क्षेत्राधिकारी पिपरी के निर्देशन में थाना पिपरी की संयुक्त गठित टीम की गयी । जिस क्रम में गठित टीम द्वारा आज दिनांक 01.10.2024 को समय करीब 11.00 बजे मुखबिर की सूचना पर थाना पिपरी अन्तर्गत खाडपाथर के जंगलों में एक ट्रक संख्या श्प् 12 ीं 3068 लदी हुई एल्युमिनियम को दुसरी ट्रक संख्या श्प् 48 ऐं 2382 में लोड़ कर रहे 10 टन एल्यूमिनियम (कीमती 31 लाख रुपये) के साथ 03 नफर अन्तर्राज्जीय अभियुक्तगण को पकड़ लिया गया गया । गिरफ्तारी व वरामदगी के आधार पर अभियोग उपरोक्त में धारा 317(2) बीएनएस की बढोत्तरी की गयी । पूछताछ का विवरण- गिरफ्तार अभियुक्तगणों से पूछताछ की गयी तो अभियुक्त इस्माइल पीर मोहम्मद शेख ने बताया कि ट्रक संख्या श्प् 12 ीं 3068 मेरे नाम से पंजीकृत है । मेरे सहयोगी अजमत अली, सैय्यद फजल व वारिस अली सभी लोग ट्रक ट्रांसपोर्ट व भंगार का कार्य करते है । वारिस अली ने फोन से सूचना दिया कि वह अपने साथी विद्यासागर मिश्रा व राजा मियां के माध्यम से हिन्डालको कम्पनी रेनुकूट सोनभद्र से एल्युमिनियम की सिल्ली को ट्रक संख्या व्प् 02 ँ 5761 की फर्जी कागजात, फर्जी एग्रीमेंट व फर्जी नम्बर प्लेट लगाकर औरंगाबाद व पुणे में एल्युमिनियम की सिल्ली को बेचने के उपरान्त शेष बची हुई सिल्ली को झारखण्ड व बिहार में ले जाकर छोटे-मोटे कबाडियों को बेचने की योजना बनाई थी । गिरफ्तार अभियुक्तगण का विवरण - 1- इस्माइल पीर मोहम्मद शेख पुत्र स्व0 पीर मोहम्मद निवासी अन्नासाम नगर चिचंवड 18, थाना पिपरी, जनपद पूणे, महाराष्ट्र उम्र 65 वर्ष । 2- अजमत अली उर्फ अमजद खान पुत्र आशरफ उल्लाह खान निवासी जीन्सी खास गेट, थाना जीन्सी,जनपद औरंगाबाद, महाराष्ट्र उम्र 36 वर्ष । 3- सैय्यद फजल पुत्र सैय्यद बादशाह निवासी भरत नगर बालूज, थाना बालूज, जनपद औरंगाबाद, महाराष्ट्र उम्र 37 वर्ष । बरामदगी का विवरणः- 1- माल एल्यूमिनियम इंगट कुल 10 टन (कीमत 31 लाख रुपये) । 2- ट्रक नं0 श्प् 12 ीं 3068। 3- ट्रक नं0 श्प् 48 ऐं 2382 । 4- एक अदद कार आई ट्वन्टी श्प् 20 एए 7778 । 5- अभियुक्तगणों के पास से कुल 5200 रुपये नगद । गिरफ्तारी/बरामदगी करने वाली पुलिस टीमः- 1. उ0नि0 राजेश जी चौबे, चौकी प्रभारी रेनूकूट थाना पिपरी सोनभद्र । 2. हे0का0 प्रकाश सिंह, सर्विलांस टीम, जनपद सोनभद्र । 3. का0 प्रदीप कुमार, का0 सिकन्दर सरोज, थाना पिपरी सोनभद्र ।

सोनभद्र है धर्म और आध्यात्म की है सांस्कृतिक नगरी इसके बिना धर्म की कल्पना अधूरी- परम पूज्य संत श्री मिथिलेशनन्दिनीशरण जी महाराज

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। संवाददाताःआज सोनभद्र एकदिवसीय प्रवास कार्यक्रम पर पहुंचे धर्माचार्य आध्यात्मिक एवं दार्शनिक विचारक सिद्ध पीठ श्री हनुमन्निवास अयोध्या धाम के परम पूज्य संत श्री मिथिलेशनन्दिनीशरण जी महाराज जी ने कहा कि सोनभद्र धर्म और आध्यात्मिक सांस्कृतिक नगरी है।

सोनभद्र के बिना धर्म की कल्पना अधूरी है। सोनभद्र मानव जीवन के आध्यात्म क्षेत्र में धर्म का केंद्र है तो वही जीविकोपार्जन के लिए अर्थ नगरी है यह वही सोनभद्र है जहां अंत्योदय की कल्पना से लेकर ऋषियों एवं मुनियों के तपोस्थलीय तक के लिए विश्व के मानस पटल पर सूर्य के समान रोशनी और चंद्र के समान शीतलता प्रदान करता है।सोनभद्र सेवा और समर्पण का केंद्र है। सोनभद्र भारत का एकमात्र जिला है जो मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ झारखंड और बिहार के चार राज्यों से घिरा है. कौन बनेगा करोड़पति के टीवी शो में पूछा जाने वाला जिला सोनभद्र के पावन पवित्र धरा पर अनेकों भित्ति चित्र, शिव/ बड़ा देव उपासकों के द्वारा स्थापित प्राचीन शिव मंदिर, मां आदि शक्ति उपासकों के द्वारा स्थापित प्राचीन देवी मंदिर, प्राकृतिक झरने,सोन-रेणु- बिजुल-घाघरा-कर्मनासा-रिहंद-कनहर-बेलन नदियों के किनारे अत्यधिक सुंदर पर्यटन स्थल,बड़े-बड़े बाँध जैसे गोविंद बल्लभ पंत सागर उर्फ रिहंद बाँध-कनहर बाँध-नगवा बाँध -धंधरौल बाँध-ओबरा बाँध , वनों में स्थित छोटे-छोटे चुआँड, घनघोर वनों में स्थित बड़ी-बड़ी चट्टानें-गुफाएं, फॉसिल्स पार्क, बॉक्साइट-चूना पत्थर-डोलोमाइंस पत्थर-कोयला-सोना आदि जैसे बहुत सारे खनिज सम्पदाओ से परिपूर्ण ऊंची ऊंची पहाड़ियां,नदियों के रेतीले मैदान, किले जैसे अगोरी किला-विजयगढ़ किला -सोढरीगढ़ किला,कैमूर वन्यजीव अभयारण्य जहां आज भी काले हिरण विचरण करते हैं,बड़े-बड़े औद्योगिक घराने जैसे विंध्याचल थर्मल पावर स्टेशन- रिहंद थर्मल पावर स्टेशन- बिजलीघर अनपरा -बिजलीघर ओबरा - हिंडाल्को हाइड्रो -पिपरी हाइड्रो -एनसीएल कई कोयला खदानें -हिंडाल्को प्रमुख एल्युमीनियम संयंत्र -डाला सीमेंट फैक्ट्री -चुर्क सीमेंट फैक्ट्री -आदित्य बिड़ला केमिकल्स -हाई-टेक कार्बन - कनोरिया केमिकल्स पावर प्लांट - लैंको अनपरा पावर लिमिटेड है भारत के एकमात्र इसी जनपद में इस प्रकार का समुच्चय स्थित है। काशी कथा न्यास के संस्थापक डॉ अवधेश दीक्षित ने कहा कि सोनभद्र के बिना काशी ही नहीं बल्कि विश्व के किसी देव भूमि की कल्पना अधूरी रह जाती है इसलिए जिसने सोनभद्र नहीं देखा उसने संपूर्ण भारत को नहीं देखा क्योंकि संपूर्ण भारत के मानव जीवन आधारित हर प्रकार के प्रतिबिंब यहां दिखाई पड़ते हैं। यहाँ जातिवाद और वैमनस्यता की कोई जगह नहीं है यहाँ हैं तो भाई चारा यहीं कारण रहा की कभी भी किसी प्रकार शांति भंग यहाँ नहीं हुआ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग बौद्धिक प्रमुख धनंजय पाठक ने कहा कि जिसने सोनभद्र को देख लिया उसने अध्यात्म को देख लिया उसने मानवता को देख लिया उसने राष्ट्रवाद को देख लिया इसलिए सोनभद्र अवश्य देखें। परम पूज्य महाराज जी ने सोनभद्र पहुंचकर पंचमुखी महादेव, वीर लोरिक पत्थर, शिव मंदिर गोठनी,भूतेश्वर महादेव ओबरा,अमर गुफा डाला सुमित सोनभद्र के कई धार्मिक स्थलों का दृश्या अवलोकन किया. परम पूज्य स्वामी जी का हिंदूवारी मोड, चोपन, वह गुरु कृपा आश्रम में स्वागत समारोह भी संपन्न हुआ. सर्किट हाउस रावटसगंज में स्वागत विंध्य कन्या पीजी कॉलेज की प्रबंधक डॉ अंजलि विक्रम सिंह ने किया. संपूर्ण यात्रा के दौरान सुनील सिंह मंडल अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी चोपन, मनोज चौबे, बादल पांडे, रामभरोस यादव, धनंजय पाठक, पंडित आलोक कुमार चतुर्वेदी, विजय कुमार, अभय कुमार,शिखर कुमार, प्रवीण चन्द्र पाण्डेय समेत सैकड़ो लोग शामिल रहे।

पूर्व सैनिको व उनके आश्रितो को निशुल्क प्रशिक्षण दिया जाएगा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। कैप्टन (नौ सेना) आशुतोष चैधरी (अ0प्रा0) जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास अधिकारी सोनभद्र ने अवगत कराया है कि जनपद में निवास करने वाले पूर्व सैनिक एवं उनके आश्रितें/दिवंगत सैनिकों की पत्नियों एवं उनके आश्रितों को निःशुल्क 480 घण्टे इन्फोरमेशन टेक्नोलॉजी प्रशिक्षण (ओ लेबल स्तर का) 30 दिन का एस0एस0बी0 कोचिंग, 300 घण्टे कम्प्यूटर फैशन डिजाइनिंग कोर्स तथा 180 घण्टे कम्प्यूटर टैली कोर्स कराया जाना प्रस्तावित है। उन्होंने बताया कि उक्त प्रशिक्षण के लिए इच्छित समस्त पूर्व सैनिकों, उनकी विधवाओं एवं उनके आश्रितों से अनुरोध है कि ईच्छुक अभ्यर्थी अपना नाम जिला सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास कार्यालय कमरा नं0-52 विकास भवन, सोनभद्र में 06 अक्टूबर,2024 तक देने का कष्ट करें एवं इस निःशुल्क प्रशिक्षण का लाभ उठायें।

समाज कल्याण राज्य मंत्री ने पटवध-बसुआरी मार्ग का किया स्थलीय निरीक्षण

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
गुरमा,सोनभद्र।ओबरा विधानसभा के बहुप्रतीक्षित नव निर्माणाधीन पटवध-बसुआरी का मंगलवार के दिन समाज कल्याण एंव अनुसूचित जनजातीय राज्य मंत्री संजीव सिंह गोंड ने स्थलीय निरिक्षण कर मानक एंव गुणवत्ता की हकीकत जानी उसके बाद जनहित मे जल्द से जल्द मार्ग का निर्माण पुरा करने के लिए संबधित अधिकारियो को निर्देश दिया। इस अवसर मे मंत्री ने कहा की यह मार्ग निर्माण हो जाने पर आदिवासी क्षेत्र के दर्जनो गांवो समेत माता अमिला धाम जाने वाले श्रदालुओ को रास्ता सुगम हो जाएगा इस अवसर पर डाला मंडल अध्यक्ष दीपक दुबे पीडब्लूडी के अधिकारीगण मौजूद रहे।

अभ्योदय व एकलव्य कोचीन मे अधिकारी कर रहे है भ्रष्टाचारःछात्र

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। कलेक्ट्रेट परिसर में मंगलवार को दर्जनों छात्राओं द्वारा कोचिंग संस्थान में अध्यापकों का सुचारू रूप से उपस्थित न होने के विरोध में विरोध प्रदर्शन करते हुए जिलाधिकारी नामित ज्ञापन सीडीओ को देखकर छात्राओं ने बुलंद की आवाज । छात्रों ने बताया कि छात्रों के लिए मुख्यमंत्री की महत्वकांक्षी अभ्योदय व एकलव्य कोचीन मे अधिकारी कर रहे है भ्रष्टाचार सरकार की योजनाओं को अधिकारी लगा रहे पलीता अभ्युदय कोचिंग योजना का सही तरीके से नही हो रहा संचालन अध्यापकों के अभाव में छात्रों की पढ़ाई हो रही बाधित समाज कल्याण अधिकारी कोई जवाब देने से भागते फिर रहे है समाज कल्याण अधिकारी की कार को छात्रों ने रोका कोचिंग के छात्रों ने जिलाधिकारी और सीडीओ से किया शिकायत जेईई और नीट की तैयारी कर रहे है छात्र-छात्राये कोचिंग में अध्यापक नियुक्त करने अथवा कोचिंग टाइम बढ़ाने की मांग को लेकर बुलंद की आवाज इस मौके पर नेहा,अंजली,स्वेता,अंजली ,अमृता,खुशबू,अंगद ,महेश,संदीप,मनीष सहित अन्य मौजूद रहे।

बैठक में संगठन की मजबूती को लेकर दी गई जिम्मेदारी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। शनिवार को समाजवादी पार्टी जिला अध्यक्ष राम निहोर यादव ने बताया कि समाजवादी पार्टी की

मासिक बैठक हर माह की तरह बैठक आहूत की गई । बैठक की अध्यक्षता पार्टी जिला अध्यक्ष राम निहोर यादव ने किया और संचालन जिला महासचिव मोहम्मद शईद कुरैशी ने किया। बैठक को संबोधित करते हुए समाजवादी पार्टी जिला अध्यक्ष राम निहोर यादव ने कहा कि कार्यकर्ता ही संगठन का रीड होता है । हम समाजवादी पार्टी के एक-एक पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं से अनुरोध है कि आप लोग क्षेत्र में जाकर संगठन को मजबूत करें और ग्रामीण जनता की समस्याओं को सुनने का काम करें जिससे हम जनमानस की समस्या को दूर किया जा सके । बैठक को संबोधित करते हुए सांसद छोटेलाल सिंह खरवार ने कहा कि आज संगठन का ही देन है कि हम आज सांसद बने हुए हैं । हमारा कर्तव्य है कि हम संगठन के हित के लिए हर समय तैयार हैं और उनके दुख दर्द में शामिल रहेंगे और लोकसभा क्षेत्र के सभी सम्मानित जनमानस का हम उनकी समस्याओं को सुनने का काम करेंगे और उनकी समस्याओं को सदन तक उठाने का काम करेंगे ।बैठक को संबोधित करते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव पूर्व जिला अध्यक्ष पूर्व विधायक अविनाश कुशवाहा एवं पूर्व विधायक रमेश चंद दुबे ने कहा कि हम लोगों की जिम्मेदारी है कि संगठन को मजबूत करें और हर जन मानस की समस्याओं को सुनने का काम करें ।समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने अपने मुख्यमंत्री कार्यकाल में हर वर्ग को एक साथ लेकर चलने का काम किया और जन कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से हर समाज को आगे बढ़ने का काम किया और हमेशा उनकी लड़ाई लड़ने के लिए तत्पर रहते हैं । बैठक में मुख्य रूप से पूर्व जिला अध्यक्ष विजय यादव अरविंद कुमार गौड़ वेदमानी शुक्ला राम प्यारे सिंह पटेल अनिल प्रधान अशोक पटेल डॉक्टर लोकपति सिंह पटेल रमेश सिंह यादव विजय शंकर जायसवाल रमाशंकर यादव सुरेश यादव रमेश कुमार वर्मा बाबूलाल यादव गीता गौर परमेश्वर यादव त्रिपुरारी गौड़ अवध नारायण यादव पवन पटेल बबलू धागर सत्यम पांडे शिव कुमारी अवधेश मिश्रा सूरज मिश्रा पवन बलवंत यादव जितेंद्र संजय पासवान राजमणि यादव जमुना यादव के साथ सैकड़ो कार्यकर्ता उपस्थित थे।

करमा ब्लॉक में राष्ट्रीय आविष्कार परीक्षा का आयोजन हुआ

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र।शनिवार को करमा ब्लॉक में राष्ट्रीय अविष्कार परीक्षा का आयोजन करमा ब्लॉक पर किया गया जिसमें करमा ब्लॉक के प्रत्येक उच्च प्राथमिक विद्यालयों व कम्पोजिट विद्यालय मगरदहा) तथा मॉडल प्रतियोगिता में उच्च प्राथमिक विद्यालय बौडाड़ व उच्च प्राथमिक विद्यालय नागनार हरैया ने प्रथम स्थान, उच्च प्राथमिक विद्यालय पगिया ने द्वितीय तथा कम्पोजिट विद्यालय भटौलीया हमारे देश नित नए- नए आविष्कार हो रहा है, आप सभी बच्चे हमारे देश के भविष्य है और आप लोग विज्ञान के द्वारा अपना और देश का गौरव बढ़ा सकते हैं।कार्यक्रम में खण्ड शिक्षा अधिकारी राकेश कुमार पाण्डेय ने कहा

विद्यालयों के कक्षा 6, 7 व 8 के 3- 3 सर्वक्षेष्ठ बच्चों ने प्रतिभाग किया जिनकी परीक्षा 21 सितम्बर को विद्यालयों में आयोजित की गयी थी।उक्त परीक्षा खण्ड शिक्षा अधिकारी राकेश कुमार पांडेय के मार्गशन में सम्पन्न हुआ जिसमें पर्यवेक्षक के रूप में डायट प्रवक्ता जिज्ञासा यादव के रूप उपस्थित रही।विज्ञान क्विज प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ 5 बच्चे - आयुष दिनकर व आशुतोष मौर्या (कम्पोजिट विद्यालय भटौलिया), नेहा व सूर्या (उच्च प्राथमिक विद्यालय बौडाड़, अनंत कुमार (कम्पोजिट ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।क्विज प्रतियोगिता में बच्चों ने उत्साह व जिज्ञासापूर्वक प्रतिभाग किया तथा काफी उच्च स्तर के प्रश्नों का भी सटीक उत्तर दिया तथा मॉडल प्रतियोगिता में निरीक्षक ने बच्चों से मॉडल के सम्बंध में तरह तरह के प्रश्न किये जिसका उत्तर बच्चों ने उत्साहपूर्वक ढंग से दिया।कार्यक्रम में पर्यवेक्षक डायट प्रवक्ता जिज्ञासा यादव ने बच्चों के अच्छे कार्य की सराहना की व उन्होंने बच्चों शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज का समय विज्ञान का समय है और कि ये बच्चे हो आगे चलकर देश का गौरव बढायेंगे तथा इनका परिश्रम ही इन्हें सफल बनायेगा।आगे उन्होंने बच्चों को शुभकामनाएं देते उन्हें और भी बेहतर करने के लिए प्रेरित किया।कार्यक्रम में निर्णायक के रूप एआरपी राजकुमार मौर्य,राधेश्याम पाल, नवीन कुमार रॉय, दिनेश कुमार सिंह व अखिलेन्द्र प्रताप सिंह,हिफाजत हुसैन, आशीष निरंजन, सरस, ऐहतेसाम, पूनम यादव, स्मिता पाल, ओम प्रकाश, मनीष सिंह, संजय पाल, ऋचा नंदा, सोनी,नवीन श्रीवास्तव, निर्पत सिंह पटेल,मनीष पटेल सहित शिक्षक व बच्चे उपस्थित रहे।

सुभासपा की बैठक सम्पन्न,हर गाँव मे सदस्य बनाने पर की गई मंत्रड़ा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी की बैठक राबर्ट्सगंज स्थित नगर कार्यालय पर जिला अध्यक्ष मनोज देव पांडेय की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में सौरभ कांत पति तिवाती द्वारा नव नियुक्त पदाधिकारीयों का सम्मान समारोह किया गया। पार्टी में जुड़े हुए पदाधिकारी को जिम्मेदारी सौंप गई।जिला अध्यक्ष मनोज देव पांडेय ने कहा कि के सभी पदाधिकारी देव पांडेय हमारे जनपद के होनहार जिला अध्यक्ष हैं उनके नेतृत्व में पार्टी निरंतर अग्रसर हो रही है इसीलिए तो माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष ने भरोसा जताते हुए उन्हें तीसरी बार जिला अध्यक्ष की कमान सौम्पी है। नवनियुक्त महिला महिला मंच जिला अध्यक्ष सोनमती ने कहां की गांव-गांव से महिलाओं को जोड़कर महिलाओं की समस्या को सुनेंगे और महिलाओं को न्याय दिलाएंगे उन्होंने कहा कि महिला ही समाज

मिलकर गांव स्तर पर सदस्यता अभियान चलाएं। श्री पांडेय ने बताया कि पांच सौ सक्रिय सदस्य बनाने का लक्ष्य रखा गया है।उन्होंने कहा कि हर गांव से सदस्य जुड़ेंगे और पार्टी को मजबूत करेंगे।उन्होंने कहा कि हमारा यह लक्ष्य है कि चाभी निशान वाला पीला झंडा हर घर पर फहरे और हर घर के लोग पार्टी से जुड़कर समाज के लिए एक बेहतर मिसाल कायम करें। प्रमुख महासचिव अनुराग बियार ने कहा कि मनोज की स्तंभ है इसलिए महिला सम्मान सर्वोपरि है उन्होंने कहा कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाएंगे और सरकार की योजनाओं का लाभ प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाएंगे। रामजी पाठक,शाहिद अली खान,शेषमणि,विशेष दुबे,रामजी पाठक,अनुराग बियार,बाबूलाल मौर्य,इमरान अंसारी,अजय कुमार गुप्ता,वीरेंद्र प्रसाद,ममता, बबीता,आदि लोग उपस्थित रहे।

राजकीय बालिका विद्यालय दुद्धी, सोनभद्र में अध्यनरत एक मेधावी छात्रा को सांकेतिक रूप में एक दिन की जिलाधिकारी नियुक्त किया गया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। जिलाधिकारी सोनभद्र एवं पुलिस अधीक्षक सोनभद्र द्वारा संयुक्त रूप से तहसील दुद्धी पर संपूर्ण समाधान के अवसर पर सुनी गयी फरियादियों की समस्याएं शिकायतों के निष्पक्ष व न्यायोचित निस्तारण हेतु सम्बन्धित को दिये आवश्यक दिशा-निर्देश शासन के मंशा के अनुरूप महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु मिशन शक्ति फेज-5 के अभियान तहत जनपद की महिलाओं एवं बालिकाओं को देश-प्रदेश के संवैधानिक व प्रशासनिक पदों पर पहुंचने की प्रेरण व पदगत दायित्वों का निर्वहन करने हेतु जागरुकता लाने के क्रम में राजकीय बालिका विद्यालय दुद्धी, सोनभद्र में नौ वीं कक्षा में अध्यनरत एक मेधावी छात्रा पल्लवी शर्मा को आज दिनांक-05.10.2024 को सांकेतिक रूप में ङ्खएक दिन की जिलाधिकारीङ्ग नियुक्त किया गया ।

आज दिनांक 05.10.2024 को तहसील दुद्धी में आयोजित संपूर्ण समाधान दिवस में आये फरियादियों की समस्याओं को सुनकर गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध निस्तारण हेतु सम्बंधित को निर्देशित किया गया । इस मौके पर जिलाधिकारी सोनभद्र बी0एन0 सिंह, पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अशोक कुमार मीणा, उप जिलाधिकारी दुद्धी निखिल यादव सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहें ।

देश/विदेश

मेरा देश भारत

संक्षिप्त समाचार

तिरुपति में सीएम नायडू ने किया वेंगाम्बा सेंट्रलाइज्ड किचन का उद्घाटन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू श्रीवारी वर्षिका ब्रह्मोत्सवम के मौके पर तिरुमाला के तिरुमाला देवस्थानम में वेंगाम्बा सेंट्रलाइज्ड किचन के उद्घाटन में शामिल हुए। तिरुपति मंदिर पिछले कुछ दिनों से विवादों में है। दरअसल, मंदिर के प्रसाद में इस्तेमाल की जाने वाली घी में पशु चर्बी की पुष्टि होने के बाद से ही मंदिर विवादों के घेरे में आ गया। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने जांच के लिए एक नई स्वतंत्र एसआईटी गठित करने का आदेश दिया है। कोर्ट के अनुसार, एसआईटी में सीबीआई के दो अधिकारी, आंध्र प्रदेश पुलिस के दो अधिकारी और एफएसएसएआई का एक वरिष्ठ अधिकारी होगा। सीबीआई निदेशक एसआईटी जांच की निगरानी करेंगे।आंध्र में जून में सत्ता परिवर्तन हुआ था। जिसके बाद चंद्रबाबू नायडू की पार्टी सत्ता में वापस आई है। मुख्यमंत्री का पद संभालने के बाद चंद्रबाबू नायडू ने मंदिर के लड्डुओं में मिलावट की आशंका जाहिर की थी। जिसके बाद मंदिर प्रशासन ने सप्लाई किए गए घी के सैंपल लेकर जांच के लिए गुजरात स्थित डेयरी विकास बोर्ड की लैब 'सेंटर ऑफ एनालिसिस एंड लर्निंग इन लाइव स्टॉक एंड फूड' भेजे थे। जिसके बाद लैब की रिपोर्ट में चौंकाने वाले खुलासे हुए। दआंध्र में जून में सत्ता परिवर्तन हुआ था। जिसके बाद चंद्रबाबू नायडू की पार्टी सत्ता में वापस आई है। मुख्यमंत्री का पद संभालने के बाद चंद्रबाबू नायडू ने मंदिर के लड्डुओं में मिलावट की आशंका जाहिर की थी। जिसके बाद मंदिर प्रशासन ने सप्लाई किए गए घी के सैंपल लेकर जांच के लिए गुजरात स्थित डेयरी विकास बोर्ड की लैब 'सेंटर ऑफ एनालिसिस एंड लर्निंग इन लाइव स्टॉक एंड फूड' भेजे थे।

पीएम मोदी ने वाशिम में बंजारा विरासत संग्रहालय का किया उद्घाटन

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी महाराष्ट्र के एक दिवसीय दौरे पर आजमाया। पीएम मोदी ने संत सेवालाल महाराज और पोहरादेवी में संत रामराव महाराज की समाधि पर

हैं। आज सुबह पीएम मोदी नांदेड़ एयरपोर्ट पर पहुंचे, जहां भाजपा नेता अशोक चह्वाण ने उनका स्वागत किया। यहां से उन्होंने हेलीकॉप्टर से पोहरादेवी के लिए उड़ान भरी। वाशिम जिले के पोहरादेवी में जगदंबा माता मंदिर में पीएम मोदी ने पूजा अर्चना की और पारंपरिक ढोल पर हाथ भी श्रद्धांजलि भी अर्पित की। इसके बाद उन्होंने बंजारा विरासत म्यूजियम का उद्घाटन किया और बंजारा समुदाय की समृद्ध विरासत के जश्न में शामिल भी हुए। वाशिम के बाद पीएम मोदी ठाणे और मुंबई का भी दौरा करेंगे, जहां वे विभिन्न परियोजनाओं का उद्घाटन करेंगे पीएम मोदी शाम करीब चार बजे ठाणे में 32,800 करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न विकास परियोजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास करेंगे। वे मुख्यमंत्री माझी लड़की बहिन योजना के लाभार्थियों को सम्मानित भी करेंगे। इसके बाद पीएम मोदी शाम करीब छह बजे बीकेसी मेट्रो स्टेशन से बीकेसी से आरे जेवीएलआर, मुंबई के बीच चलने वाली मेट्रो ट्रेन को हरी झंडी दिखाएंगे। वह बीकेसी और सांताक्रूज स्टेशन के बीच मेट्रो में सवारी भी करेंगे। पीएमओ के मुताबिक, प्रधानमंत्री लगभग 9.4 करोड़ किसानों को लगभग 20,000 करोड़ रुपये की पीएम-किसान सम्मान निधि की 18वीं किस्त जारी करेंगे। इसके साथ ही सम्मान निधि के तहत किसानों को जारी कुल धनराशि लगभग 3.45 लाख करोड़ रुपये हो जाएगी। पीएम मोदी 'नमो शेतकारी महासम्मान निधि योजना' की 5वीं किस्त भी जारी करेंगे। इसके तहत लगभग 2,000 करोड़ रुपये जारी किए जाएंगे।

पैगंबर मोहम्मद के खिलाफ हिंदू संत की टिप्पणी से मचा बवाल, भीड़ ने पुलिस पर किया पथराव, 21 घायल

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। पुलिस आयुक्त रेड्डी ने कहा कि कुछ लोगों ने हिंदू संत की टिप्पणियों का वीडियो प्रसारित किया, खिलाफ मामला दर्ज करने की मांग करते हुए भीड़ ने पुलिस पर पथराव किया, जिसमें 21 पुलिसकर्मी घायल हो गए। पुलिस ने बाद में गाजियाबाद

जिसके बाद लोगों का एक बड़ी समूह पुलिस स्टेशन में वापस आया। जब पुलिस ने भीड़ को समझाने की कोशिश की, तब उन्होंने पथराव करना शुरू कर दिया। महाराष्ट्र के अमरावती शहर में पैगंबर मोहम्मद के खिलाफ एक हिंदू संत की आपत्तिजनक टिप्पणी ने विवाद खड़ा कर दिया। संत के के हिंदू संत यति नरसिंहानन्द महाराज के खिलाफ मामला दर्ज किया। पथराव में कम से कम 10 पुलिस वाहन क्षतिग्रस्त हो गई। यह घटना शुक्रवार की रात को नागपुरी गेट पुलिस स्टेशन के बाहरी इलाके में घटी। इस घटना पर 1200 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है और उनमें से पुलिस ने 26 की पहचान कर ली है। अमरावती के पुलिस आयुक्त नवीन चंद्र रेड्डी ने इस घटना पर मीडिया से बात की। उन्होंने कहा, ठगाजियाबाद के यति नरसिंहानंद महाराज के खिलाफ मामला दर्ज करने की मांग को लेकर दबाव बनाने के लिए कुछ संगठनों के सदस्यों समेत बड़ी भीड़ रात करीब 8.15 बजे नागपुरी गेट पुलिस स्टेशन पर आई। पुलिस स्टेशन के इन चार्ज ने भीड़ को बताया कि उनकी मांग पर एक एफआईआर दर्ज कर ली गई है और फिलहाल मामले की जांच की जा रही है, जिसके बाद भीड़ वापस चली गई।ठपुलिस आयुक्त रेड्डी ने कहा कि कुछ लोगों ने हिंदू संत की टिप्पणियों का वीडियो प्रसारित किया, जिसके बाद लोगों का एक बड़ी समूह पुलिस स्टेशन में वापस आया। जब पुलिस ने भीड़ को समझाने की कोशिश की, तब उन्होंने पथराव करना शुरू कर दिया। वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने स्थिति को संभाला और भीड़ को तितर-बितर किया। घटनास्थल पर अतिरिक्त पुलिसकर्मियों को भेजा गया। उन्होंने आगे कहा, ठहमले में कुछ पुलिसकर्मी और अधिकारी घायल हो गए और अब पुलिस भीड़ के खिलाफ कार्रवाई कर रही है।ठपुलिस ने भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धारा 163 के तहत निषेधाज्ञा लागू कर नागपुरी गेट इलाके में पांच या उससे अधिक लोगों के इकट्ठा होने पर रोक लगा दी है। पुलिस आयुक्त ने कहा, ठ1200 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है, जिसमें से 26 लोगों की पहचान हो चुकी है। भारतीय न्याय संहिता की विभिन्न धाराओं के तहत उनके खिलाफ मामला दर्ज किया गया है।ठ पुलिस फिलहाल उन लोगों की पहचान कर रही है जो इस दंगे में शामिल थे। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बताया कि हमले में 21 पुलिसकर्मी घायल हुए हैं, जबकि 10 पुलिस वाहन क्षतिग्रस्त हो गई।

बंगलूरू में विदेशी नागरिकों पर राज्य मंत्री ने केंद्र को घेरा, कहा- यह केंद्रीय एजेंसियों की असफलता

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नई दिल्ली। कर्नाटक के बंगलूरू में पिछले महीने अवैध तरीके से रह रहे चार विदेशी नागरिकों की गिरफ्तारी पर राज्य गृह मंत्री जी परमेश्वर ने प्रतिक्रिया दी। उन्होंने इस मामले में केंद्र पर निशाना साधा। उनका कहना है कि केंद्र के पास आर एंड डब्ल्यू, आईबी और अन्य केंद्रीय एजेंसियां हैं, उन्हें इन चीजों पर नजर रखनी चाहिए। उन्होंने इसे केंद्रीय एजेंसियों की असफलता बताया। राज्य मंत्री ने एजेंसियों के पास उनके बारे में कोई जानकारी न होने पर सवाल किया। कर्नाटक के गृह मंत्री जी. परमेश्वर ने कहा, ठउनके (केंद्र) पास आर एंड डब्ल्यू, आईबी और अन्य केंद्रीय एजेंसियां हैं। उन्हें इन चीजों पर नजर रखनी चाहिए। वे बंगलूरू कैसे पहुंचे और उन्हें पासपोर्ट कैसे मिला। यह केंद्रीय एजेंसी की असफलता है। जब राज्य पुलिस को इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने गिरफ्तार करते हुए शानदार काम किया। हमें यहां कुछ और पाकिस्तानी नागरिकों के रहने की जानकारी मिली है। उन्हें भी जल्द गिरफ्तार किया जाएगा।ठबंगलूरू पुलिस ने रविवार को पाकिस्तानी नागरिक, उसकी पत्नी और उसके माता-पिता को गिरफ्तार किया। परमेश्वर के अनुसार, ये सभी बंगलूरू में पिछले 10 साल से रह रहे थे। उन्होंने पूछा कि खुफिया एजेंसियों के पास उनके बारे में कोई जानकारी कैसे नहीं थी। राज्य मंत्री ने बताया कि उनके पास फर्जी भारतीय पासपोर्ट भी पाए गए। इससे पहले एनआईए ने प्रतिबंधित आतंकी संगठन यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम से जुड़े होने के आरोप में बेंगलुरु में एक 29 वर्षीय व्यक्ति को गिरफ्तार किया था।

कर्नाटक के स्वास्थ्य मंत्री के खिलाफ एफआईआर, सावरकर के खिलाफ आपत्तिजनक बयान देकर फंसे

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

कर्नाटक। गौड़ा ने मंत्री को सावरकर पर खुली चर्चा के लिए चुनौती भी दे डाली। उन्होंने कहा, 'मैं गुंडू राव को

इस मामले पर सार्वजनिक चर्चा के लिए एक तिथि, स्थान और समय निर्धारित करने की चुनौती देता हूं। स्वतंत्रता सेनानी वीडी सावरकर के खिलाफ बयान देकर कर्नाटक के स्वास्थ्य मंत्री दिनेश गुंडू राव मुश्किलों में फंस गए हैं। दरअसल बजरंग दल के एक कार्यकर्ता ने शुक्रवार को स्वास्थ्य मंत्री के खिलाफ मामला दर्ज कराया है। शिकायतकर्ता तेजस गौड़ा ने कहा कि 'स्वास्थ्य मंत्री को सार्वजनिक रूप से अपनी भाषा के प्रति अधिक सतर्क रहना चाहिए। स्वास्थ्य मंत्री के रूप में वे एक जिम्मेदार पद पर हैं और जब भी वे मीडिया को संबोधित करते हैं या सार्वजनिक रूप से बोलते हैं, तो उन्हें सावधान रहना चाहिए। वीर सावरकर के बारे में उनका हालिया बयान अनुचित था।' तेजस गौड़ा ने कहा कि 'दिनेश गुंडू राव ने अपने हालिया बयान में दावा किया था कि सावरकर ब्राह्मण होने के बावजूद गोमांस खाते थे। मैं दिनेश गुंडू राव से पूछना चाहता हूं- क्या आपके पास इस बात का कोई सबूत है कि सावरकर ने गोमांस खाया था?' बजरंग दल कार्यकर्ता ने आगे कहा कि 'मैं सीधे पूछता हूं, क्या वीर सावरकर आपके (दिनेश गुंडू राव) सपनों में आए और उन्होंने ये स्वीकार किया।

डॉक्टर्स ने बंगाल सरकार को दिया 24 घंटे का अल्टीमेटम, आमरण अनशन शुरू करने की दी चेतावनी

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

बंगाल। प्रदर्शनकारी डॉक्टर्स का कहना है कि 'जब आप किसी कारण के लिए लड़ाई लड़ते हैं तो आप ये उम्मीद नहीं कर सकते कि चीजें

आसान होंगी। हालांकि हमने उम्मीद की थी कि हमारे साथ राज्य सरकार की तरफ से अच्छा व्यवहार होगा। पुलिस द्वारा किया गया लाठीचार्ज और अपशब्द कहना, दोनों ही गलत हैं। हम उनसे माफी की मांग करते हैं।' जूनियर डॉक्टर्स ने अपनी 'पूरी तरह से काम रोकों' हड़ताल को वापस लेने का फैसला किया है, लेकिन इसके बावजूद डॉक्टर्स ने अपना विरोध प्रदर्शन जारी रखा है। दरअसल शुक्रवार को कोलकाता के एसएसकेएम अस्पताल में डॉक्टर्स एक रैली निकाल रहे थे। इस दौरान पुलिस ने डॉक्टर्स की रैली पर लाठीचार्ज किया। पुलिस द्वारा लाठीचार्ज किए जाने से डॉक्टर्स में नाराजगी है। बारिश के बावजूद डॉक्टर्स का विरोध प्रदर्शन जारी है। डॉक्टर्स एल्पालांडे इलाके में विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। इस दौरान कुछ प्रदर्शनकारी छाता लेकर तो कुछ पॉलीथीन के शेड के नीचे छिपे दिखाई दिए। डॉक्टर्स ने इससे पहले पूरी तरह से काम रोकने का एलान किया था, लेकिन शुक्रवार को रात करीब साढ़े आठ बजे उन्होंने पूरी तरह से काम रोकने की हड़ताल वापस लेने का फैसला किया। डॉक्टर्स ने बंगाल सरकार को 24 घंटे का अल्टीमेटम दिया है और मांग की है कि या तो सरकार उनकी मांगे मान ले या फिर वह आमरण अनशन शुरू कर देंगे।

बॉलीवुड/टेली मसाला

साउथ अभिनेता राजेंद्र प्रसाद की बेटी गायित्री का निधन, नानी-जूनियर एनटीआर ने दी श्रद्धांजलि

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। दिग्गज तेलुगु अभिनेता राजेंद्र प्रसाद की बेटी का आज सुबह हार्ट अटैक के कारण निधन हो गया। अभिनेता नानी, जूनियर एनटीआर और अन्य ने सोशल मीडिया पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी। दिग्गज तेलुगु अभिनेता राजेंद्र प्रसाद की बेटी गायत्री का शनिवार, 5 अक्तूबर की सुबह दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। गायत्री 38 साल की थीं और उन्हें अपनी मौत के समय हैदराबाद के एआईजी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। गायत्री की असामयिक मृत्यु पर तेलुगु फिल्म उद्योग ने शोक व्यक्त किया, जिसमें नानी और जूनियर एनटीआर जैसी हस्तियां शामिल थीं।

अभिनेता ने अपने आधिकारिक एक्स हैंडल पर एक पोस्ट साझा किया और इस खबर पर अपना दुख व्यक्त किया। नानी ने पोस्ट साझा करते हुए लिखा, 'राजेंद्र प्रसाद गारू और उनके परिवार के प्रति गहरी संवेदना। यह दिल दहला देने वाला है।' वहीं, जूनियर एनटीआर ने भी अपने एक्स हैंडल पर पोस्ट करते हुए लिखा, 'राजेंद्र प्रसाद की बेटी गायत्री, जो मुझे बहुत प्रिय थीं, उनका निधन बहुत दुखद है। मैं प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शांति मिले। राजेंद्र प्रसाद और उनके परिवार के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं।'अभिनेता नवदीप ने भी सोशल मीडिया पर अपनी संवेदना व्यक्त की। उन्होंने लिखा, 'राजेंद्र प्रसाद गारू आपकी प्यारी बेटी गायत्री के निधन से बहुत दुखी हूं। इस अकल्पनीय कठिन समय में मैं आपको और आपके परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं। भगवान उनकी आत्मा को शांति दे।गायत्री ने कल देर रात यानी 4 अक्तूबर सीने में दर्द की शिकायत की थी और उन्हें तुरंत हैदराबाद के एक कॉर्पोरेट अस्पताल में इलाज के लिए ले जाया गया। दुखद बात यह है कि तत्काल चिकित्सा सहायता मिलने के बावजूद आज सुबह तड़के उनकी मौत हो गई। अभिनेता राजेंद्र प्रसाद एक फिल्म के सेट पर थे, जब उन्हें अपनी बेटी गायत्री की हालत के बारे में पता चला। गायत्री के परिवार में उनके पति और बेटी हैं। गायत्री का अंतिम संस्कार आज किया जाएगा।

रिलीज से पहले ही 'सिंघम अगेन' का धमाल, इतने करोड़ में बिके फिल्म के डिजिटल राइट्स

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। रोहित शेट्टी के कॉप यूनिवर्स की अगली फिल्म 'सिंघम अगेन' दिवाली पर रिलीज होने वाली है। यह उनके कॉप यूनिवर्स की पांचवी फिल्म है। फिल्म के रिलीज होने में काफी कम समय बचा है और इसी बीच ऐसी खबरें आई हैं कि रोहित शेट्टी की इस फिल्म के

डिजिटल और म्यूजिक राइट्स 200 करोड़ में बेच दिए हैं। खबरों की मानें तो यह फिल्म की रिलीज से पहले बड़ी डील साबित हुई है। रोहित शेट्टी की 'सिंघम अगेन' ने अपनी रिलीज से पहले ही बड़ी कमाई की है। अजय देवगन की मुख्य भूमिका वाली इस फिल्म को नॉन-थियेट्रिकल डील मिल गई है। कम से कम हालिया मीडिया रिपोर्ट तो यही बताती है। शेट्टी की कॉप-यूनिवर्स की पांचवीं फिल्म ने रिलीज से कुछ हफ्ते पहले ही 200 करोड़ रुपये की कमाई कर ली है। पिंकविला की रिपोर्ट्स की मानें तो रोहित शेट्टी और जियो स्टूडियोज ने 'सिंघम अगेन' के संयुक्त सैटेलाइट, डिजिटल और म्यूजिक राइट्स 200 करोड़ रुपये में बेचे हैं। रिपोर्ट में प्रोडक्शन से जुड़े एक सूत्र के हवाले से दावा किया गया है कि रोहित शेट्टी की फिल्में हमेशा टीवी पर पसंदीदा होती हैं और उनकी रिपीट वैल्यू बहुत ज्यादा होती है। सूत्र ने बताया, ठयह अजय देवगन और रोहित शेट्टी के लिए सबसे बड़ी नॉन-थियेट्रिकल डील है। रोहित शेट्टी की फिल्मों ने हमेशा दर्शकों की जबर्दस्त मांग के कारण सैटेलाइट प्लेयर्स से बड़ी रकम हासिल की है। वहीं, सिंघम अगेन को डिजिटल प्लेयर्स ने भी प्रीमियम कीमत दी है। इस फिल्म में किसी फीचर फिल्म के लिए सबसे बड़े कलाकारों का सेटअप है। बता दें कि अजय और करीना कपूर खान के अलावा, इसमें रणवीर सिंह, अक्षय कुमार, दीपिका पादुकोण और टाइगर श्रॉफ भी पुलिस की भूमिका में हैं। जैकी श्रॉफ और अर्जुन कपूर खलनायक की भूमिका में हैं, जबकि आशुतोष राणा, दयानंद शेट्टी और श्वेता तिवारी सहायक भूमिकाओं में नजर आने वाले हैं।

जब अच्छा अभिनेता बनने के लिए शाहरुख खान ने दिलीप कुमार से मांगा सुझाव

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। बॉलीवुड जगत के सुपरस्टार शाहरुख खान ने एक बार दिलीप कुमार से उनके अभिनय और शानदार फिल्मों की प्रसिद्धी को लेकर

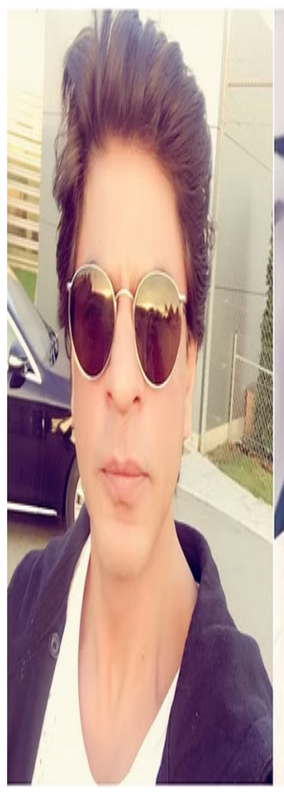

सवाल किया था। इसके जवाब में दिलीप कुमार शाहरुख खान को फिल्म और अभिनय के बारे में समझाते हुए अपना सुझाव भी दिया था। अभिनेता दिलीप कुमार को सिनेमा जगत का सुपरस्टार माना जाता है। वह अपनी एक्टिंग और फिल्मों के कारण वह चर्चा में रहते हैं। दिलीप कुमार की फिल्मों की लंबी लिस्ट है, जो आज के सितारों के लिए सीख का एक अच्छा उदाहरण भी बनती हैं। अभिनेता शाहरुख खान भी उनमें से एक हैं जो उनकी इसी प्रसिद्धी के करीब पहुंच सके हैं। शाहरुख खान ने एक बार दिलीप कुमार से अच्छे अभिनय के लिए सलाह ली थी।बॉलीवुड के किंग खान शाहरुख खान ने एक बार दिलीप कुमार से सवाल किया था, 'सर वो कौन से गुण और चीजें हैं जो आपकी फिल्म को इतनी सराहनीय, चिरस्थायी और यादगार बना देती हैं'। इस पर दिलीप कुमार ने जवाब दिया, 'यह एक मुश्किल सवाल है, जिससे मुझे निपटना होगा'। दिलीप कुमार ने इसका जवाब दिया कि गुडलक, कड़ी मेहनत, ईमानदारी और टीम के साथ मिलकर काम करना ही फिल्म को शानदार बनाता है। दिलीप कुमार ने इसका जवाब दिया कि कोई भी अभिनेता अपने किरदार से बड़ा नहीं हो सकता है। इसमें कहानी और अभिनय शामिल है। किसी भी अच्छी फिल्म के लिए अच्छी कहानी, दमदार किरदार और रिश्ते, अच्छे अवसर होने चाहिए। अभिनेता के पास उस कहानी से जुड़ने के लिए सही अवसर भी होना जरूरी है। एक अभिनेता के लिए केवल सतही नहीं बल्कि वास्तविकता से जोड़ना जरूरी होता है। अभिनेता शाहरुख खान ने दिलीप कुमार की इस बात को माना और उसी तरीके से काम कर रहे हैं। शाहरुख खान भारत ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में जाने जाते हैं। वर्कफ्रंट की बात करें तो शाहरुख खान को जल्द ही किंग में देखा जा सकता है। दावा किया जा रहा है कि 'किंग' में एक डॉन की कहानी दिखाई जाएगी, जो एक लड़की का गुरु बन जाता है। शाहरुख खान डॉन की भूमिका निभाएंगे, वहीं उनकी बेटी सुहाना खान उनकी शिष्या के रूप में नजर आएंगी। अभिषेक बच्चन फिल्म में नकारात्मक भूमिका में नजर आएंगे।

आदित्य धर की फिल्म में मुख्य भूमिका निभाएंगी सारा अर्जुन रणवीर सिंह के साथ करेंगी रोमांस

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' की सफलता के बाद रणवीर सिंह एक और सोलो प्रोजेक्ट के साथ बड़े पर्दे पर वापसी करेंगे। नई फिल्म का निर्देशन आदित्य धर करेंगे। वहीं,

अब इस फिल्म में मुख्य नायिका की भूमिका निभाने वाली अभिनेत्री के बारे में जानकारी सामने आई है। नई जानकारी के अनुसार, सारा अर्जुन इस फिल्म में रणवीर सिंह के साथ स्क्रीन साझा करेंगी। सारा इससे पहले तमिल, तेलुगु और मलयालम के साथ-साथ कई हिंदी फिल्मों में भी नजर आ चुकी हैं। उन्होंने मणिरत्नम की फिल्म पोन्नियिन सेलवन में नंदिनी के बचपन का किरदार भी निभाया था। हालांकि, सारा के किरदार के बारे में विस्तृत जानकारी अभी तक नहीं मिली है, लेकिन वह पिछले कुछ वर्षों में अन्य फिल्मों में अपनी छोटी-मोटी भूमिकाओं की तुलना में अब इस फिल्म में मुख्य भूमिका निभाएंगी। हालांकि, मुख्य भूमिका निभाने के बावजूद, आगामी प्रोजेक्ट में उनकी स्क्रीन पर सीमित उपस्थिति होगी। इसके अलावा, सारा की कास्टिंग को भी कुछ आलोचनाओं का सामना करना पड़ा, जिसमें लोग उनके और रणवीर के बीच उम्र के अंतर पर सवाल उठा रहे थे। रिपोर्ट्स के अनुसार इस फिल्म का नाम 'धुरंधर' है। हालांकि, निर्माताओं की ओर से फिल्म के शीर्षक का एलान होना बाकी है। यह शीर्षकहीन फिल्म एक स्पाई एक्शन थ्रिलर होगी और आदित्य ने इसमें सहायक कलाकारों के रूप में संजय दत्त, आर. माधवन और अर्जुन रामपाल जैसे प्रतिभाशाली चेहरों को शामिल किया है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, रणवीर पाकिस्तान में एक मिशन पर तैनात एक खुफिया अधिकारी की भूमिका में दिखाई देंगे। फिल्म के लिए प्रोडक्शन का काम इस साल जुलाई में ही शुरू हो गया था और निर्माता इसे अगले साल की दूसरी छमाही तक बड़े पर्दे पर लाने की योजना बना रहे हैं। संजय दत्त खलनायक की भूमिका निभा रहे हैं, जबकि रणवीर सिंह, अक्षय खन्ना, आर माधवन और अर्जुन रामपाल भारतीय खुफिया एजेंसी का प्रतिनिधित्व करते नजर आएंगे। बताया जा रहा है कि इस फिल्म को बड़े बजट के साथ बड़े पैमाने पर शूट किया जाएगा। फिल्म की शूटिंग शुरू हो चुकी है, जिसमें धमाकेदार एक्शन सीक्वेंस और कहानी में उतार-चढ़ाव देखने को मिलेंगे। जियो स्टूडियोज की ज्योति देशपांडे द्वारा निर्मित, लोकेश धर और आदित्य धर के साथ उनके बैनर बी62 स्टूडियोज के तहत इस फिल्म का निर्देशन आदित्य ने किया है। यह राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता आदित्य धर की दूसरी प्रमुख मोशन पिक्चर होगी, जो वर्ष 2019 में रिलीज हुई रिकॉर्ड तोड़ ब्लॉकबस्टर 'उरी-द सर्जिकल स्ट्राइक' के बाद है।

तुषार कपूर का फेसबुक अकाउंट हुआ हैक, बयान जारी कर फैंस को दी जानकारी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। अभिनेता तुषार कपूर ने अपने इंस्टाग्राम पर बताया कि उनके सार्वजनिक और निजी फेसबुक अकाउंट हैक हो गए हैं और उनकी टीम इस समस्या को हल करने के लिए काम कर रही है। उन्होंने कहा कि यही कारण है कि वह हाल ही में फेसबुक पर एक्टिव नहीं रहे हैं। बॉलीवुड अभिनेता तुषार कपूर ने हाल में ही ओटीटी पर डेब्यू किया है। उन्होंने वेब सीरीज 'दस जून की रात' के साथ अपनी नई पारी की शुरुआत की है। तुषार मशहूर फिल्मी परिवार से आते हैं।

कब आएगा राम चरण की 'गेम चेंजर' का टीजर? इस दिन खत्म हो सकती है इंतजार की घड़ी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। राम चरण की फिल्म के फैंस लंबे समय से उनकी फिल्म गेम चेंजर का इंतजार कर रहे हैं।

गेम चेंजर के टीजर को लेकर एक बड़ी जानकारी सामने आई है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक इस फिल्म की झलक दशहरा के समय लोगों को देखने को मिल सकती है। राम चरण इस फिल्म में उनके साथ कियारा आडवाणी भी हैं। पिछले कुछ दिनों से इस फिल्म को लेकर लगातार अपडेट सामने आ रहे हैं। आज यानी 30 अक्तूबर को इस फिल्म का गाना रा मचा मचा रिलीज किया जाएगा। इस गाने का लॉन्च कार्यक्रम हैदराबाद के एक इंजीनियरिंग कॉलेज में आयोजित किया जाएगा। हाल ही में इस गाने का प्रोमो जारी किया गया था, जिसे देखकर फैंस का उत्साह काफी ज्यादा बढ़ गया था। इस गाने की झलक में राम चरण जमकर थिरकते नजर आए थे। रा मचा मचा को थमन ने कंपोज किया है। इस बीच फिल्म को लेकर एक और बड़ी जानकारी सामने आई है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक प्रशंसकों की बेसब्री को देखते हुए गेम चेंजर के निर्देशक शंकर और उनकी टीम टीजर को दर्शकों के सामने पेश करने के लिए जोर शोर से जुटे हुए हैं। निर्माता दिल राजू ने भी हाल ही में इस बात की जानकारी एक साक्षात्कार के दौरान दी थी। फिल्मी हलकों हो रही चर्चाओं की मानें तो फिल्म का बहुप्रतीक्षित टीजर दशहरा उत्सव के दौरान रिलीज किया जा सकता है। इंडियन 2 के बाद शंकर गेम चेंजर लेकर आ रहे हैं। दर्शकों को इस फिल्म से काफी ज्यादा उम्मीदें हैं। बताया जा रहा है कि अक्तूबर महीने में प्रशंसकों की खुशी को दोगुना करने की तैयारी है।

मैगी स्मिथ से लेकर एलन रिकमैन तक, इस दुनिया में अब नहीं हैं हैरी पॉटर के ये सितारे

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। जेके राउलिंग के उपन्यासों पर आधारित हैरी पॉटर निस्संदेह एक ऐसी फ्रैंचाइज है, जिसने आधुनिक सिनेमा के इतिहास में अपनी

खास जगह बनाई है। इन फिल्मों को दुनियाभर में भरपूर प्यार मिला। इस फिल्म में नजर आने वाले कई किरदारों ने लोगों के मन में गहरी छाप छोड़ी है। हालांकि, इसमें काम कर चुके कई मशहूर सितारे अब हमारे बीच नहीं हैं। आइए एक नजर डालते हैं। हैरी पॉटर में प्रोफेसर मिनर्वा मैकगोनागल की भूमिका के लिए लोकप्रिय मैगी स्मिथ का हाल ही में 89 वर्ष की आयु में निधन हो गया था। उनके बेटों क्रिस लार्किन और टोबी स्टीफेंस ने एक बयान में इस खबर की पुष्टि की थी। हैरी पॉटर में उनके किरदार को काफी पसंद किया गया था। एलन रिकमैन हैरी पॉटर की सभी आठ फिल्मों में नजर आए थे। इनमें वह प्रोफेसर सेवेरस स्नेप के किरदार में दिखे थे। लंबे समय तक अग्नाशय के कैंसर से जूझने के बाद जनवरी 2016 में उन्होंने दुनिया को अलविदा कह दिया था। रॉबी कोलट्रैन ने रूबेस हैग्रिड नाम के हॉगवर्ट्स के गेटकीपर और चाबियों के रखवाले का किरदार निभाया था। लोगों को उनकी भूमिका खूब पसंद आई थी। हृदय रोग की जटिलताओं के कारण अक्टूबर 2022 में उनका निधन हो गया था। रिचर्ड हैरिस ने हैरी पॉटर की पहली दो फिल्मों में एल्बस डंबलडोर का किरदार अदा किया था। अक्टूबर 2002 में हॉजकिन रोग के कारण उनकी मृत्यु हो गई थी। माइकल गैंबोन को हैरी पॉटर की आठ में से छह फिल्मों में हॉगवर्ट्स के हेडमास्टर एल्बस डंबलडोर का किरदार निभाने के लिए जाना जाता है। 2002 में रिचर्ड हैरिस की मृत्यु के बाद डंबलडोर की भूमिका निभाने के लिए चुना गया था। निमोनिया के कारण होने वाली जटिलताओं की वजह से सितंबर 2023 में उनका निधन हो गया था। रिचर्ड ग्रिफिथ्स फिल्म हैरी पॉटर के अंकल की भूमिका निभाई थी। फिल्म में उनके किरदार का नाम वर्नन डर्स्ली था। मार्च 2013 में हृदय की सर्जरी के बाद उत्पन्न हुई जटिलताओं के कारण उनका निधन हो गया था। इस सूची में हेलेन मैकक्रॉरी का नाम भी शामिल है। उन्होंने फिल्म में ड्रेको की मां नार्सिसा मालफॉय की भूमिका निभाई थी। वह भी अब इस दुनिया में नहीं हैं। लंबे समय तक कैंसर से जूझने के बाद अप्रैल 2021 में उन्होंने दुनिया को अलविदा कह दिया था।

शादी की दूसरी सालगिरह पर ऋचा ने साझा कीं अनदेखी तस्वीरें, कहा- सभी कार्यक्रम प्लास्टिक मुक्त थे

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। ऋचा चड्ढा ने इंस्टाग्राम एनिवर्सरी से पहले ऋचा ने एक पोस्ट इंस्टाग्राम पर साझा किया है। उन्होंने संगीत सेरेमनी की अनदेखी तस्वीरें साझा करते हुए लिखा है, 'आज दो साल हो गए। हमारी ये तस्वीरें देखते हुए मेरी आंखें नम हो रही हैं'। ऋचा ने आगे लिखा है, 'हमारी शादी के सभी कार्यक्रम प्लास्टिक मुक्त थे।' मालूम हो कि ऋचा चड्ढा पर्यावरण संरक्षण को लेकर काफी जागरुक हैं और इस तरफ अक्सर अपने फैंस का भी ध्यान आकर्षित करती हैं। ऋचा चड्ढा और अली फजल ने पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए कुछ दिनों पहले पौधारोपण का काम भी किया था। उन्होंने अपने करीबियों, प्रियजनों और शुभचिंतकों के नाम पर पौधे लगाए। आज अभिनेत्री ने अपनी शादी के फंक्शन की तस्वीरें साझा करते हुए फिर पर्यावरण की सुरक्षा की तरफ लोगों का ध्यान आकर्षित किया है। उन्होंने स्पष्ट किया है कि बात जब पर्यावरण की हो तो वे खुद भी छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखती हैं।ऋचा चड्ढा और अली फजल ने 2 अक्तूबर 2022 को शादी रचाई। इससे पहले उन्होंने काफी वक्त एक-दूसरे को डेट किया था। ऋचा और अली ने 2022 में पारंपरिक तरीके से शादी रचाई, जबकि उससे पहले साल 2020 में दोनों रजिस्टर्ड मैरिज कर चुके थे। कपल ने इस साल अपनी पहली संतान के रूप में बिटिया का स्वागत किया है।

पर संगीत सेरेमनी की अनदेखी तस्वीरें साझा करते हुए लिखा है, 'आज दो साल हो गए। हमारी ये तस्वीरें देखते हुए मेरी आंखें नम हो रही हैं'। अभिनेत्री ऋचा चड्ढा और अली फजल की शादी को अगले महीने अक्तूबर में दो साल पूरे होने जा रहे हैं। अपनी दूसरी वेडिंग प्री-वेडिंग कार्यक्रमों की कुछ अनदेखी तस्वीरें पोस्ट की हैं। इसके साथ उन्होंने शादी को लेकर एक खुलासा किया है। अभिनेत्री ने बताया कि उनकी शादी के सभी कार्यक्रमों में एक बात का खास ख्याल रखा गया और वह ये कि सभी फंक्शन प्लास्टिक फ्री रहे। ऋचा चड्ढा ने इंस्टाग्राम पर

एंटीलिया से रणवीर सिंह के साथ विजेंदर सिंह ने साझा कीं तस्वीरें, फैंस को भाया ऐसा अवतार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। नीता अंबानी ने ओलंपियनों और पैरालिंपियनों को एक साथ लाने और उनके काम को सराहने के लिए 'यूनाइटेड इन ट्रायम्फ' समारोह का आयोजन किया। इस

समारोह में बॉलीवुड अभिनेता रणवीर सिंह भी पहुंचे। मुक्केबाद विजेंदर सिंह ने रणवीर के साथ फोटो शेयर की है। अभिनेता रणवीर सिंह 29 सितंबर को में नीता अंबानी के 'यूनाइटेड इन ट्रायम्फ' इवेंट में शामिल हुए। ये समारोह भारत के ओलंपियन और पैरालिंपियन के लिए अंबानी परिवार के मुंबई स्थित निवास एंटीलिया में आयोजित हुआ था। भारतीय मुक्केबाज विजेंदर सिंह ने सोशल मीडिया पर इसी समारोह की तस्वीरें साझा की हैं। इस फोटो में विजेंदर सिंह के साथ रणवीर सिंह, नीता अंबानी, अनंत अंबानी, आकाश अंबानी नजर आ रहे हैं। भारत के ओलंपिक और पैरालिंपिक खिलाड़ियों के लिए आयोजित इस समारोह में बॉलीवुड अभिनेता भी शामिल होने पहुंचे। रणवीर सिंह भी इस समारोह में अपनी एक अलग एनर्जी के साथ नजर आए। फोटो में नीता अंबानी लाल रंग की साड़ी में नजर आ रही हैं। फोटो शेयर करते हुए विजेंदर कुमार ने लिखा - 'जब मैं एक दयालु और सम्मानित महिला से एंटिलिया में मिला, वह सच में दया का सार हैं' सोशल मीडिया पर भी कुछ वीडियो में रणवीर सिंह अंबानी परिवार के साथ बातचीत करते नजर आ रहे हैं। हाल ही में पिता बने रणवीर सिंह का एक वीडियो सोशल मीडिया पर ताबड़तोड़ वायरल हो रहा है। इसमें कार्यक्रम स्थल के बाहर तैनात पैपराजी के साथ बातचीत करते हुए उनके उत्साहपूर्ण मूड को कैद किया गया। क्लिप में, रणवीर को फोटोग्राफरों से खुशी से हाथ मिलाते हुए और उत्साह से 'बाप बन गया रे' चिल्लाते देखा जा रहा है। रणवीर को पिता बनने और पत्नी-अभिनेत्री दीपिका पादुकोण के साथ एक बच्ची का स्वागत करने पर अपनी खुशी व्यक्त करते हुए देखा जा सकता है।

शहरों की ओर आने को मजबूर हैं जंगली जानवर

राजस्थान का उदयपुर हो या उत्तर प्रदेश का बहराइच और लखीमपुर खीरी, इंसान बाघ, तेंदुओं और भेड़ियों से भयभीत है। आखिर क्या कारण है, जो वन्यजीव इंसानी खून के प्यासे हो गए हैं और मानव का शिकार करने निकल पड़े है प्रसिद्ध शिकारी एडवर्ड जेम्स 'जिम' कॉर्बेट का नाम आपने सुना होगा, जिनके नाम पर उत्तराखंड में नेशनल पार्क है। जिम कॉर्बेट शिकारी थे और वो इसलिए प्रसिद्ध हुए, क्योंकि उन्होंने 33 नरभक्षी बाघ और तेंदुओं को मारकर उत्तराखंड (तब यूनाइटेड प्रोविंस) के लोगों को आदमखोर जानवरों से निजात दिलाई थी। इन दिनों भी देश के अलग-अलग राज्यों में कई जानवर आदमखोर हो गए हैं। राजस्थान का उदयपुर हो या उत्तर प्रदेश का बहराइच और लखीमपुर खीरी, इंसान बाघ, तेंदुओं और भेड़ियों से भयभीत है। आखिर क्या कारण है, जो वन्यजीव इंसानी खून के प्यासे हो गए हैं और मानव का शिकार करने निकल पड़े हैं उदयपुर में इन दिनों तेंदुए ने आतंक मचाया हुआ है। वो अब तक सात लोगों की जान ले चुका है। वन्य विभाग इस आदमखोर तेंदुए को पकड़ने में नाकाम रहा है, क्योंकि अब तक उसने जो तेंदुए पकड़े गए हैं, वो संभवतः आदमखोर नहीं थे, क्योंकि उनके पकड़े जाने के बाद भी इंसानों का मरना जारी है। उदयपुर जैसी ही कहानी उत्तर प्रदेश के बहराइच की भी है, जहां आदमखोर बन चुके भेड़िए आए दिन शिकार कर रहे हैं। उन्होंने कई बच्चों को अपना निशाना बनाया है। दर्जनों लोग उनके हमले में घायल हो चुके हैं। वन विभाग ने कई भेड़िए पकड़े हैं, लेकिन आतंक रुकने का नाम नहीं ले रहा। उत्तर प्रदेश के लखीमपुर खीरी में एक बाघ का आतंक लगातार बढ़ रहा है। जंगली जानवरों के आदमखोर बनने के पीछे कई वजह हैं। मुख्य रूप से जंगलों का सिकुड़ना और शिकार की उपलब्धता कम होना एक मुख्य कारण है। जंगलों के आसपास या जंगलों के भीतर तक इंसान ने अपनी बस्तियां बसा रखी हैं। इंसान की गतिविधियां जंगल में बहुत तेजी से बढ़ रही हैं। जब जंगली जानवर को वनक्षेत्र में पर्याप्त शिकार नहीं मिलता है तो वो इंसानी बस्तियों की ओर रुख करता है और इंसान को अपना शिकार बना लेता है। कुछ वृद्ध जानवर भी इंसानों का शिकार करते हैं। इंसान ने अपने लिए कानून बनाए हैं, लेकिन जंगल का अपना कानून होता है। जंगली जानवर को अपने क्षेत्र में हस्तक्षेप निश्चित रूप से बर्दाश्त नहीं होता। हालांकि, जब कोई जंगली जानवर आदमखोर हो जाता है तो इंसान या तो उसे पकड़कर पिंजरों में डाल देता है या उसे मार डालता है। आदमखोर जानवरों को मारने के लिए कानून भी है, जिसके तहत किसी जानवर को आदमखोर घोषित किया जा सकता है।वाइल्ड लाइफ एक्ट 1972 के सेक्शन 11 के अनुसार ऐसा जानवर जो इंसानों के जीवन के लिए खतरा हो गया है, उसे आदमखोर बताकर मारा जा सकता है। देश की आबादी लगातार बढ़ रही है। विकास की अंधाधुंध दौड़ में इंसान जंगलों को लगभग काट चुका है। आखिर जानवर जाएं तो जाएं कहां? कभी भारत में जंगल ही जंगल थे, लेकिन आज देश में जानवरों के लिए चंद नेशनल पार्क बनाकर छोड़ दिए गए हैं, लेकिन इनमें भी इंसान ने अतिक्रमण कर रखा है। सरकारें ऐसे अतिक्रमणों पर अब तक कोई भी ठोस कदम नहीं उठा सकी हैं। जब भी आदमखोर जानवरों द्वारा कोई घटना होती है तो वन विभाग चंद दिनों के लिए पिंजरे लगाकर जानवरों को पकड़ या मारकर अपने काम से इतिश्री कर लेता है।जंगल का भी अपना एक नियम है, जिसे समझने में इंसान अब तक असफल ही रहा है। आखिर जानवरों को भी पृथ्वी पर रहने का उतना ही अधिकार है, जितना इंसानों को है। यदि जानवर नहीं रहेंगे तो पृथ्वी का संतुलन बिगड़ जाएगा। पहले ही बड़ी संख्या में वन्यजीव विलुप्त हो चुके हैं और कई विलुप्त होने की कगार पर हैं। सरकारों को केवल कानून बनाकर अपने काम की इतिश्री नहीं करनी चाहिए। कानूनों की सख्ती से पालना और मॉनिटरिंग की आवश्यकता है। ईमानदारी से जानवरों को उनका इलाका सौंपने की जरूरत है। यदि ऐसा न हुआ और विकास की अंधी दौड़ चलती रही तो वन्यजीवों का आदमखोर बनना जारी रहेगा। इंसान और जानवरों की लड़ाई यूं ही चलती रहेगी।

दुर्गापूजा पर आर.जी. कर कांड की छाया पंडालों पर डॉक्टर के लिए न्याय की मांग

पश्चिम बंगाल में दुर्गा पूजा पर डॉक्टर केस का असर साफ दिखाई दे रहा है। कोलकाता की नाकतला नबपल्ली दुर्गापूजा समिति न आर.जी. कर की पीड़िता के लिए न्याय की मांग करते हुए पूरे पंडाल को ऐसे पोस्टरों और तस्वीरों से सजाने का फैसला किया है। पंडाल की साज-सज्जा में महिला अधिकारों की भी वकालत की जाएगी। पश्चिम बंगाल के सबसे बड़े त्योहार दुर्गा पूजा पर आर.जी. कर मेडिकल कॉलेज कांड की छाया साफ नजर आ रही है। बीते महीने उस सरकारी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में एक जूनियर डॉक्टर के साथ रेप के बाद उसकी हत्या कर दी गई थी, उसके बाद लंबे अरसे तक जूनियर डॉक्टरों के आंदोलन के कारण स्वास्थ्य व्यवस्था पूरी तरह बदहाल हो गई थी।इस घटना के विरोध में राज्य की कई दुर्गा पूजा समितियों ने सरकारी अनुदान लेने से इंकार कर दिया है। इधर, राज्य सरकार करीब 43 हजार समितियों को 85-85 हजार रुपए का अनुदान देती है। इसके साथ ही तमाम प्रमुख आयोजन समितियों ने बजट घटा दिए हैं। इसकी वजह यह है कि उनको पिछले साल की तरह प्रायोजक नहीं मिल सके हैं। कोलकाता और उसके आसपास करीब तीन हजार पूजा आयोजित की जाती है। थीम आधारित इस उत्सव में हर साल देश-विदेश की प्रमुख घटनाओं को पंडालों की साज-सज्जा और लाइटिंग के जरिए दर्शाया जाता है। इस साल इस उत्सव पर आर.जी. कर की घटना की छाया नजर आ रही है। कुछ पूजा समितियों ने महिला सुरक्षा को अपनी थीम बनाया है तो एक समिति ने सती दाह को। कोलकाता की नाकतला नबपल्ली दुर्गापूजा समिति न आर.जी. कर की पीड़िता के लिए न्याय की मांग करते हुए पूरे पंडाल को ऐसे पोस्टरों और तस्वीरों से सजाने का फैसला किया है। पंडाल की साज-सज्जा में महिला अधिकारों की भी वकालत की जाएगी। इस साल आम लोगों ने आर.जी. कर की घटना को ध्यान में रखते हुए पूजा को उत्सव की तरह नहीं मनाने का फैसला किया है, इसलिए पूजा का आयोजन तो पहले जैसा ही होगा. लेकिन उसमें रंगीनियां नहीं होंगी। पहले जहां दुकानो में रोजाना औसतन 20 से 25 हजार की बिक्री होती थी वह अब घटकर पांच से 10 हजार के बीच यानी आधा या उससे भी कम रह गई है। कपड़ा बिक्रेताओं का दावा है कि इस बार कारोबार पिछले साल के मुकाबले एक-तिहाई है। बंगाल में दुर्गा पूजा का कारोबार 50 हजार करोड़ से ज्यादा है. पूजा के दौरान कॉर्पोरेट घराने 800 से लेकर 1000 करोड़ रुपए से ज्यादा तक खर्च करते हैं. इंडियन चैंबर ऑफ कॉमर्स पहले ही अनुमान जता चुका है कि 2030 तक दुर्गा पूजा का टर्नओवर मेगा कुंभ मेला के बराबर हो जाएगा जो करीब एक लाख करोड़ रुपए है। कोलकाता और उसके आस-पास के इलाकों में हर साल करीब साढ़े चार हजार पूजा आयोजित की जाती है. इनमें करीब दो सौ आयोजन ऐसे हैं, जिनमें हर पूजा में 50 से ज्यादा लोगों को रोजगार मिलता है. बाकियों में से हर पूजा में 20 से ज्यादा लोगों को रोजगार मिलता है. कुल मिलाकर करीब तीन लाख रोजगार पैदा होते हैं. इनमें टैक्सी ड्राइवर औ? टूर गाइड्स भी शामिल हैं. लोग इस बार उत्सव मनाने के मूड में नहीं हैं। हर साल पूजा के करीब दो महीने पहले से ही प्रमुख बाजारों में भीड़ उमड़ने लगती थी, लेकिन इस साल अपवाद है. इस साल पहले जैसी भीड़ नहीं नजर आ रही है. बिक्री का आंकड़ा भी काफी घट गया है। कोलकाता की एक प्रमुख आयोजन समिति, जिसका बजट करोड़ों में होता है, के संयोजक दीपंकर दास बताते हैं कि इस साल प्रायोजक ही नहीं मिल रहे हैं। पिछले साल के मुकाबले आधे विज्ञापन भी नहीं मिले हैं. इसकी वजह से बजट में भारी कटौती करनी पड़ी है आयोजन समितियों के साझा मंच फोरम फार दुर्गोत्सव के अध्यक्ष पार्थ घोष बताते हैं कि पूजा की करीब 50 हजार करोड़ की अर्थव्यवस्था में 16 सौ करोड़ के खर्च पंडालों और साज-सज्जा पर किया जाता है।

सम्पादकीय

विश्व शांति के लिए खतरा बना ईरान, पश्चिमी एशिया में तनाव की आग और भड़की

हिजबुल्ला के मुखिया हसन नसरुल्ला की इजरायली हमले में मौत के बाद पश्चिमी एशिया में तनाव की आग और भड़क गई है। नसरुल्ला की मौत के जवाब में ईरान ने इजरायल पर मिसाइलों से हमला बोला। इजरायल ने इन मिसाइल हमलों का बदला लेने की कसम खाई है। इससे पहले इजरायल ने ईरान में हमास चीफ इस्माइल हानिया को भी ढेर किया था, लेकिन तब ईरान ने इजरायल पर कोई सीधी सैन्य कार्रवाई नहीं की थी। इस बार लेबनान में विभिन्न इलेक्ट्रानिक उपकरणों में विस्फोटों के जरिये हजारों हिजबुल्ला आतंकियों के घायल होने और कई के मारे जाने और फिर नसरुल्ला की मौत के बाद ईरान अत्यंत मजबूर दिखने लगा और उसके द्वारा समर्थित विभिन्न आतंकी गुटों के भीतर ही ईरान की इजरायल नीति को लेकर आवाजें उठने लगी थीं। ईरान में 1979 की इस्लामिक क्रांति के चलते आयतुल्ला खोमैनी के नेतृत्व में बनी कट्टरपंथी इस्लामिक सरकार ने पूरे पश्चिमी एशिया में आतंकी संगठनों का जाल बिछाया। इस्लामिक जगत का नेतृत्व शिया वर्ग के हाथ में लेने के लिए खोमैनी के नेतृत्व वाले ईरानी शासनतंत्र ने पूरे विश्व के मुस्लिम मानस को प्रभावित करने वाले फलस्तीन के मुद्दे को चुना और इजरायल के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष छेड़ने के लिए हिजबुल्ला जैसे आतंकी संगठनों को समर्थन देना शुरू किया। शिया और सुन्नी इस्लाम के समीकरणों की एक खास बात यह है कि कोई सुन्नी मुसलमान शिया भी बन सकता है, क्योंकि मुस्लिम जगत में शिया अल्पसंख्यक हैं। इसलिए खोमैनी के कठमुल्ला तंत्र के लिए यह आवश्यक था कि वह सुन्नी अतिवादियों के भी एक तबके को अपने साथ ले। चूंकि अधिकांश सुन्नी अतिवादी शिया इस्लाम के कट्टर विरोधी हैं और आर्थिक रूप से सुन्नी अरब देशों पर निर्भर रहे हैं, इसलिए ईरान के लिए यह चुनाव आसान नहीं था। ऐसे में सुन्नी मुस्लिम ब्रदरहुड की फलस्तीन इकाई यानी हमास ईरान का औजार बनी। खोमैनी ने इस्लामिक शासन का जो कट्टरवादी माडल मुस्लिम जगत के सामने पेश किया, उससे दुनिया भर के इस्लामिक कट्टरपंथी प्रभावित हुए। इसका एक परिणाम यह हुआ कि अरब जगत की तमाम सेक्युलर सरकारें और तानाशाह धीरे-धीरे अपनी लोकप्रियता खोते गए और इस्लामिक कट्टरपंथी मजबूत होते गए। जो सुन्नी राजशाहियां इस लहर में बच भी पाईं, उन्होंने अपने ऊपर से दबाव हटाने के लिए दूसरे देशों में सुन्नी जिहादी संगठनों का समर्थन करना शुरू किया, जिसकी परिणति अलकायदा से लेकर तालिबान जैसे तमाम सुन्नी आतंकी संगठनों के उदय के रूप में हुई। अफगानिस्तान की तालिबान सरकार तो खोमैनी के कठमुल्ला शासन का सुन्नी संस्करण ही थी। तालिबान सरकार के 1996 में सत्ता में आने पर उसे तीन देशों से ही मान्यता मिली थी-सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात और पाकिस्तान। इनमें से पहले दो देशों का उद्देश्य ईरान से सटे अफगानिस्तान में खोमैनी के शिया इस्लामिक राष्ट्र जैसा ही एक प्रतियोगी सुन्नी शासनतंत्र खड़ा करना था, जिसका प्रमुख भी एक कट्टरपंथी मौलाना हो और जहां सुन्नी कट्टरपंथियों को इकट्ठा रखकर उनकी शक्ति को दूसरे देशों की ओर निर्देशित रखा जा सके। खोमैनी की इस्लामिक क्रांति का एक और प्रभाव यह भी हुआ कि दुनिया भर के अशांत मुस्लिम क्षेत्रों के लोगों को लगा कि हिंसा के माध्यम से सत्ता को पलटा जा सकता है। खोमैनी ने मुस्लिम जगत में अपनी स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए इस भावना को खूब हवा भी दी और फलस्तीन से लेकर कश्मीर तक के मुसलमानों को अपने भाषणों के जरिये उकसाया। ईरान के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए सुन्नी देशों ने और बढ़-चढ़कर आतंकी संगठनों की सहायता की। इस प्रकार यह एक दुष्चक्र बन चुका है, जिसके चलते लाखों लोग जान गंवा चुके हैं। भारत के ईरान के साथ संबंध ठीक-ठाक ही रहे हैं और सुन्नी पाकिस्तान को काबू में रखने के लिए दोनों देशों ने कई स्तरों पर साथ काम भी किया है, लेकिन ईरान की ओर से ये संबंध बस यहीं तक सीमित रहे हैं। वह पाकिस्तान के सुन्नी कट्टरपंथियों को बस खुद पर हावी नहीं होने देना चाहता। खोमैनी के कठमुल्लावाद में भी भारत के लिए इससे अधिक जगह नहीं है। अभी हिजबुल्ला पर इजरायली हमलों से कुछ दिन पहले ही भारत में मुसलमानों की दशा की फलस्तीन से तुलना करते हुए खामनेई ने एक भड़काऊ ट्वीट (पोस्ट) किया था। परंपरागत रूप से ईरान भारत और उसके भागों में सक्रिय रही कट्टरपंथी शक्तियों के संरक्षक की भूमिका निभाता रहा है। भारत से उखाड़ फेंके जाने पर हुमायूं ने ईरान के शाह की सहायता से ही मुगल साम्राज्य को भारत में फिर से स्थापित किया था। जब औरंगजेब के बाद मुगल कमजोर पड़े तो नादिर शाह भारतीयों से लूटी गई अपार धन-संपदा को ईरान ले गया। नादिर शाह के बाद उसके सेनापति अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर कई हमले कर मराठों के विस्तार को रोका और मुगलों को पतन से बचाया। कम ही लोग जानते हैं कि 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध से पहले ईरान के शाह ने कराची बंदरगाह की रक्षा के लिए पाकिस्तान से गुप्त समझौता कर रखा था। भारत को यह संदेश भी भिजवाया गया था कि अगर उसने पश्चिमी पाकिस्तान पर हमला किया तो ईरानी फौजें आगे बढ़कर पाकिस्तान की रक्षा करेंगी। बलूचिस्तान के एक हिस्से पर कब्जा जमाए बैठा ईरान पाकिस्तान की तरह ही उसके स्वतंत्रता आंदोलन का निर्ममता से दमन करता आया है। ईरान को परमाणु तकनीक उपलब्ध कराने में भी पाकिस्तान के कुख्यात परमाणु वैज्ञानिक एक्यू खान का हाथ रहा है। अगर ईरान भारत का भरोसेमंद मित्र देश होता तो पाकिस्तान के सुन्नी जनरल कभी ईरान को परमाणु तकनीक उपलब्ध न कराते।

भला मिथुन चक्रवर्ती को दादा साहब फ़ालके पुरस्कार क्यों

इस साल के दादा साहब फ़ालके पुरस्कार को मिथुन चक्रवर्ती को दिए जाने की घोषणा के साथ विवाद उठ खड़ा हुआ। इसमें शक नहीं, हर साल की भांति फिल्मी दुनिया में इस साल भी कई उपयुक्त उम्मीदवार थे। माधबी मुखर्जी, धर्मेंद्र, शबाना आजमी, जानु बरुआ, गोविंद निहलाणी... इनमें से कुछ काफी आयु के हो चुके हैं। हम विवाद-काल में रह रहे हैं। हर बात पर विवाद हमारा शगल है। किताब लिखिए, विवाद खड़ा होगा, फेसबुक पार पोस्ट डालिए बहस होगी, गाली-गलौज होगी, फिल्म बनाइए किसी की भावनाएं आहत होंगी, पुरस्कार तो वैसे भी माना जाता है कि तोड़-तोड़ से मिलते हैं। आज कोई पुरस्कार-सम्मान विवाद से परे नहीं है। नोबेल पुरस्कार हो अथवा साहित्य अकादमी, ऑस्कर या फ़िर दादा साहब फ़ालके पुरस्कार हो सब विवादास्पद हो गए हैं। निःसंदेह पुरस्कार की संख्या उम्मीदवारों से काफी कम होती है, मजबूत दावेदारों के रहते हुए भी सम्मान किसी एक अथवा यदि बांटने की परम्परा हो, तो दो या दो से अधिक को भी मिल सकता है। तब भी सब उम्मीदवारों को नहीं मिलेगा। जाहिर सी बात है, लोगों की अपनी पसंद होती है और निर्णायकों की अपनी। जिसे नहीं मिलता है, उनमें से कुछ केलिए अंगूर खट्टी हो जाते हैं। जिनके पसंददीदा लोगों को नहीं मिलता है, उन्हें बहुत बुरा लगता है।बस विवाद के लिए इतना काफी है। कुछ लोग गुण के अलावा जाति, धर्म, रंग, क्षेत्र के आधार पर पुरस्कार की वकालत प्रच्छन्न रूप से करते हैं। एक अनार सौ बीमार की स्थिति का इलाज क्या हो सकता है, विवाद के अलावा? इस साल के दादा साहब फ़ालके पुरस्कार को मिथुन चक्रवर्ती को दिए जाने की घोषणा के साथ विवाद उठ खड़ा हुआ। इसमें शक नहीं, हर साल की भांति फिल्मी दुनिया में इस साल भी कई उपयुक्त उम्मीदवार थे। माधबी मुखर्जी, धर्मेंद्र, शबाना आजमी, जानु बरुआ, गोविंद निहलाणी... इनमें से कुछ काफी आयु के हो चुके हैं। तर्क है, उन्हें देना चाहिए था, उनके पास समय कम है। सोच कर देखिए, यह तर्क कितना बेबुनियाद है। कौन कब तक रहेगा और कौन कब जाएगा क्या यह तय है क्या इस तर्क का मतलब यह नहीं कि कम उम्र वाले पुरस्कार के हकदार नहीं हो सकते? खैर, मिथुन को दादा साहब फालके पुरस्कार नहीं मिलना चाहिए था, के स्थान पर हम यह देखे कि उन्हें यह पुरस्कार क्यों मिलना चाहिए था। लिमका बुक ऑफ़ रिकॉर्ड्स में एक साल (1989) में 19 फिल्मों के रिकॉर्ड के साथ दर्ज मिथुन चक्रवर्ती सैंकड़े के आस-पास फिल्मों में काम किया है। मगर यह पुरस्कार की योग्यता कदापि नहीं हो सकती है। हां, हिन्दी फिल्मों के संमृद्ध परिवार से आए लंबे-चौड़े, खूबसूरत नायकों के मुकाबले कद में बहुत ऊंचे नहीं, पर अच्छी कद-काठी के, सामान्य परिवार से आने वाले सांवले मिथुन ने कुछ अविस्मरणीय भूमिकाएं की हैं। उन्हें तीन बार राष्ट्रीय पुरस्कार ('मृगया', 'तहादेर कथा', 'स्वामी विवेकानंद') प्राप्त हुए हैं। उन्होंने रामकृष्ण परमहंस एवं जल्लाद की भूमिकाएं एक साल में आस-पास की हैं जो उनके अभिनय की रेंज का प्रमाण हैं।मृणाल सेन की जन्म शताब्दी मनाई जा रही है। मृणाल सेन की पहली रंगीन फिल्म थी 'मृगया' और इस फिल्म के नायक के रूप में उन्होंने मिथुन चक्रवर्ती को चुना। सेन ने मिथुन को उनके बेझिझक व्यवहार के लिए चुना। सेन ने मिथुन को पुणे फिल्म संस्थान के ग्रेजुएशन समारोह के अवसर पर देखा था। उस समय उन्हें मिथुन का बेझिझक व्यवहार जंचा नहीं था मगर जब वे 'मृगया' (1976) बनाने चले तो उन्हें वही लंबे बाल वाला 1973 बैच का सांवला लड़का याद आया और उन्होंने अपने काबिल सिनेमाटोग्राफर के. के. महाजन की सहायता से उससे संपर्क किया और उसे फिल्म में मुख्य भूमिका दी। सेन की पारखी नजर और निर्देशन तथा मिथुन के अभिनय का कमाल था, मिथुन को सर्वोत्तम अभिनेता का राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। जबकि यह उनकी पहली फिल्म थी। जल्द ही मिथुन चक्रवर्ती युवाओं के क्रेज बन गए। 1982 में आई फिल्म 'डिस्को डॉन्सर' ने हिन्दी सिनेमा को एक नई दिशा दे दी। सिनेमा का समाज खासकर युवा पर बहुत गहरा प्रभाव होता है। इस फिल्म ने गली-गली में डिस्को डॉन्सर पैदा कर दिए। इसी का गान बज रहा था, इसी पर लोग नाच रहे थे। और इसी साल आई बुद्धदेब दासगुप्ता की फिल्म 'तहादेर कथा' जिसने मिथुन को सर्वोत्तम अभिनय का और बांग्ला फिल्म को सर्वोत्तम फिल्म का राष्ट्रीय पुरस्कार दिलाया। और छः साल बाद वी जी अय्यर की फिल्म 'विवेकानंद' में रामकृष्ण की सहायक भूमिका के लिए मिथुन चक्रवर्ती को एक बार फिर राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। अब तक उन्हें फिल्म के 11 पुरस्कार मिले हैं। आईएमडीबी की मानें तो मिथुन ने 380 फिल्मों मे अभिनय किया है। 'शौकीन', 'तितली', 'पसंद अपनी अपनी', 'सितारा', 'जाग उठा इंसान', 'ताशकंद फाइल्स', अनाड़ी इज बैक', काश्मीर फाइल्स' और पिछले वर्ष आई 'काबुलीवाला' आदि फिल्मों में मिथुन चक्रवर्ती ने यादगार भूमिकाएं की हैं। एक समय था उनकी फिल्म देखने केलिए टिकट खिड़की पर लंबी लाइन लगती थी। वे अब भी सक्रिय हैं। यदि ऐसे अभिनेता, सत्तर साल से ऊपर के मिथुन चक्रवर्ती को दादा साहब फ़ालके पुरस्कार मिलता है तो इतनी हाय-तोबा क्यों? मिथुन चक्रवर्ती को इस सर्वोच्च सम्मान हेतु हार्दिक बधाई! मिथुन ने 'कसम पैदा करने वाले की', 'डॉन्स डॉन्स', 'मुद्दा', 'दिलवाला', 'प्यार झुकता नहीं' जैसी सफल फिल्में कीं। उन्होंने 'स्वर्ग से सुंदर' जैसी पारिवारिक फिल्में की साथ ही 'वतन के रखवाले' जैसी मल्टीस्टारर फिल्में भी की। उनका कहा संवाद, 'कोई शक?' लोगों के सिर चढ़ कर बोला। एक समय था लोग उनकी फिल्म अनदेखी नहीं कर सकते थे। 'रात के बारह बजे', 'बूमूम लाका लाका' ने लोगों को पागल कर दिया था ऐरा था मिथुन का आकर्षण।राष्ट्रीय पुरस्कार पाने के बावजूद कुछ समय मिथुन को ढंग का काम नहीं मिला। एक बार फिर रास्ता खुला 'हम पांच', 'गुरु', 'मुजरिम' आदि ने उन्हें फिर से स्थापित किया। और फिर 1992 में

जीरो प्वाइंट से सहजनवां तक सभी कट प्वाइंट होंगे बंद, सड़के होंगी जीरो फैटलिटी घोषित

उप चिकित्साधिकारी ने एंबुलेंस रिस्पॉन्स टाइम के बारे में जानकारी दी कि गोरखपुर में प्रत्येक ब्लॉक में दो-दो एंबुलेंस उपलब्ध हैं, जो किसी भी दुर्घटना की सूचना मिलने पर 10 मिनट के भीतर दुर्घटनास्थल पर पहुंच जाती हैं। इसके साथ ही, सभी अस्पताल परिसरों में गुड सेमेरिटन के बारे में जानकारी देने वाले बोर्ड अनिवार्य रूप से लगाने के निर्देश दिए गए हैं। सड़क सुरक्षा पखवाड़े के तहत शुक्रवार को विकास भवन सभागार में अपर जिलाधिकारी की अध्यक्षता में बैठक हुई। बैठक में सड़क सुरक्षा समिति के सदस्यों ने जीरो प्वाइंट से सहजनवां तक सभी कट प्वाइंट को पूर्ण रूप से बंद करने का प्रस्ताव रखा। इसके अलावा संत कबीरनगर से तमकुही रोड पर सभी ब्लैक स्पॉट्स पर जल्द से जल्द सुधारात्मक कार्रवाई करने का निर्णय लिया गया, ताकि इस सड़क को जीरो फैटलिटी घोषित किया जा सके। उप चिकित्साधिकारी ने एंबुलेंस रिस्पॉन्स टाइम के बारे में जानकारी दी कि गोरखपुर में प्रत्येक ब्लॉक में दो-दो एंबुलेंस उपलब्ध हैं, जो किसी भी दुर्घटना की सूचना मिलने पर 10 मिनट के भीतर दुर्घटनास्थल पर पहुंच जाती हैं। इसके साथ ही, सभी अस्पताल परिसरों में गुड सेमेरिटन के बारे में जानकारी देने वाले बोर्ड अनिवार्य रूप से लगाने के निर्देश दिए गए हैं।गोरखपुर-सोनौली मार्ग पर चार ब्लैक स्पॉट्स की स्थिति की भी चर्चा की गई, जहां सुधारात्मक कार्यवाही की जा रही है। सड़क सुरक्षा पखवाड़ा के तहत बृहस्पतिवार को 91 वाहनों की जांच की गई, जिसमें 53 व्यावसायिक वाहनों पर रेट्रो रिफ्लेक्टिव टेप लगाए गए और एक वाहन का चालान किया गया। सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए बस, ट्रक, ऑटो और टैक्सी चालकों के साथ कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें 205 लोगों ने भाग लिया। यह सड़क सुरक्षा पखवाड़ा 16 अक्टूबर तक जारी रहेगा, जिससे सड़क पर सुरक्षा के प्रति जागरूकता और सख्त कदम उठाने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किए जाएंगे। इस बैठक में सहायक संभागीय परिवहन अधिकारी, यातायात निरीक्षक, और स्कूल एसोसिएशन के सदस्यों समेत कई अधिकारियों ने भाग लिया।

स्पोर्ट्स

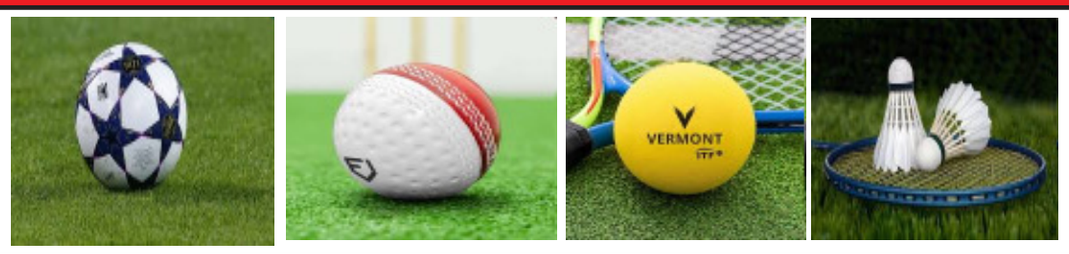

युवा सनसनी बनकर उभरे बिहार के मयंक यादव, पिता का यह सपना पूरा किया, अब रफ्तार से मचाएंगे

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। 'राजधानी एक्सप्रेस' के नाम से मशहूर हुए बिहार के लाल मयंक यादव अब भारतीय टीम के लिए गेंदबाजी करते दिखेंगे। 22 साल के इस तूफानी गेंदबाज को बांग्लादेश के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए

15 सदस्यीय टीम में जगह दी गई है। मयंक ने आईपीएल 2024 में अपनी रफ्तार और बाउंसर से कहर बरपाया था। लखनऊ सुपर जाएंट्स के लिए खेलते हुए उन्होंने चार मैचों में सात विकेट झटके थे। मयंक ने डेथ ओवर्स में गेंदबाजी करते हुए विपक्षी टीम को लक्ष्य तक नहीं पहुंचने दिया था। वह हर गेंद 150 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से फेंक सकते हैं। हालांकि, आईपीएल के बाद वह चोटिल हो गए थे और अब उनकी वापसी होने जा रही है। मयंक अपनी रफ्तार का कहर बांग्लादेश के खिलाफ बरपाने को तैयार हैं। राष्ट्रीय टीम में चयन के साथ ही उन्होंने पिता प्रभु यादव के सपने को भी पूरा किया। भारत और बांग्लादेश के बीच टी20 सीरीज की शुरुआत छह अक्तूबर से होने जा रही है।

मयंक का जन्म जून 2002 में दिल्ली में हुआ था। हालांकि, उनके दिवंगत दादा हरिश्चंद्र यादव बिहार के सुपौल जिले के मरौना दक्षिण पंचायत के रतहो गांव के रहने वाले थे। मयंक के पिता दिल्ली शिफ्ट हो गए थे, तब से मयंक भी वहीं रह रहे हैं, लेकिन वह गांव आते जाते रहे हैं। गांव के लोगों के अनुसार मयंक बहुत सीधे और सरल स्वभाव के हैं। उन्होंने दिल्ली में रहकर ही 12वीं की परीक्षा पास की है। वह दिल्ली के लिए ही घरेलू क्रिकेट भी खेलते हैं। मयंक के पिता प्रभु क्रिकेटर बनना चाहते थे, पैसे ना होने के कारण रोड पर खड़े होकर दूसरे खिलाड़ियों को खेलते हुए देखते थे। आज प्रभु यादव का बेटा भारत का सबसे बड़ा स्पीड स्टार बन चुका है। प्रभु जो न कर पाए, आज उनके बेटे ने कर दिखाया है। मयंक ने आईपीएल में अपने डेब्यू मैच में तीन विकेट लेकर धमाल मचा दिया था और क्रिकेट की दुनिया में तूफानी एंट्री ली थी। मयंक ने आईपीएल 2024 सीजन की सबसे तेज गेंद यानी की 156.7 की स्पीड से गेंद फेंकने का रिकॉर्ड भी बनाया था।

रोहित ने एक हाथ से हवा में उड़कर लिया बेहतरीन कैच, बल्लेबाज लिटन दास भी रह गए हैरान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। भारत और बांग्लादेश के बीच दो मैचों की टेस्ट सीरीज का दूसरा मुकाबला कानपुर के ग्रीन पार्क

स्टेडियम में खेला जा रहा है। इस मैच में बारिश ने खूब परेशान किया। पहले दिन 35 ओवर का खेल होने के बाद अगले दो दिन खेल नहीं हो सका। चौथे दिन फिर से खेल की शुरुआत हुई और बांग्लादेश ने अपनी पहली पारी को तीन विकेट पर 107 रन से आगे बढ़ाया। हालांकि, चौथे दिन कप्तान रोहित शर्मा ने एक ऐसा कैच लिया, जिसने बल्लेबाज से लेकर अंपायर, फैंस और साथी खिलाड़ियों को हैरान कर दिया। इसका वीडियो भारतीय क्रिकेट टीम ने इंस्टाग्राम पर शेयर किया है। दरअसल, बांग्लादेश की पहली पारी के 50वें ओवर में सिराज गेंदबाजी कर रहे थे। ओवर की तीसरी गेंद पर लिटन ने सिराज को चार्ज करना चाहा और एक आक्रामक शॉट खेला। गेंद हवा में मिड ऑफ पर गई। लिटन ने गेंद पर जोरदार हिट लगाया था और आमतौर पर ऐसे शॉट पर गेंद चौके के लिए जाती है। हालांकि, मिड ऑफ पर तैनात रोहित ने हवा में उछले और एक हाथ से कैच लिया। इसके बाद सिराज, कोहली समेत बाकी खिलाड़ी उन्हें बधाई देने पहुंचे। वहीं, लिटन को तो यकीन नहीं हुआ। वह कुछ सेकंड तक क्रीज पर ही खड़े रहे और रोहित को घूरते रहे। लिटन 13 रन बना सके।

अरुण धूमल और अविषेक डालमिया को आईपीएल संचालन समिति में मिली जिम्मेदारी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। जय शाह कुछ दिनों पहले ही अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के चेयरमैन निर्विरोध चुने गए थे। शाह एक दिसंबर से यह पद संभालेंगे और आईसीसी अध्यक्ष के तौर पर उनका कार्यकाल तीन साल की अवधि तक के लिए होगा। माना जा रहा है कि शाह नवंबर के आखिरी सप्ताह में बीसीसीआई सचिव का पद छोड़ेंगे। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) की बेंगलुरु में रविवार को वार्षिक आम बैठक (एजीएम) हुई जिसमें कुछ अहम निर्णय लिए गए। चूंकि इस बैठक के एजेंडे में नए सचिव की नियुक्ति शामिल नहीं थी, इसलिए फिलहाल जय शाह की जगह अगले

सचिव की घोषणा नहीं हुई। हालांकि, इस बैठक में मौजूद सदस्यों ने जय शाह से उनकी जगह अगला सचिव खोजने की प्रक्रिया में तेजी लाने का अनुरोध किया। जय शाह कुछ दिनों पहले ही अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के चेयरमैन निर्विरोध चुने गए थे। शाह एक दिसंबर से यह पद संभालेंगे और आईसीसी अध्यक्ष के तौर पर उनका कार्यकाल तीन साल की अवधि तक के लिए होगा। माना जा रहा है कि शाह नवंबर के आखिरी सप्ताह में बीसीसीआई सचिव का पद छोड़ेंगे। एजीएम के दौरान सदस्यों ने अगला सचिव चुनने की प्रक्रिया को पारदर्शी रखने के लिए आपस में चर्चा की है। एजीएम में भाग लेने वाले एक राज्य संघ के प्रतिनिधि ने न्यूज एजेंसी पीटीआई के हवाले से कहा, यह सभी उचित प्रक्रियाओं को जल्द से जल्द लागू करने का एक सामान्य अनुरोध था क्योंकि इससे हमारे लिए स्पष्टता होगी। इसके अलावा, हमारे पास आईपीएल नीलामी जैसे कुछ बड़े आयोजन भी आने वाले हैं। इस स्थिति में ऐसा नहीं होना चाहिए कि सभी चीजों को एक ही समय पर संभालना पड़े। मौजूदा स्थिति में दिल्ली एवं जिला क्रिकेट संघ (डीडीसीए) के अध्यक्ष रोहन जेटली, बीसीसीआई के कोषाध्यक्ष आशीष शेलार, संयुक्त सचिव देवजीत सैकिया और गुजरात क्रिकेट संघ के सचिव अनिल पटेल ऐसे उम्मीदवार हैं जो शाह का उत्तराधिकारी बनने की दौड़ में हैं। चयन प्रक्रिया के आगे के चरण में अगर कोई छुपा रुस्तम सामने नहीं आया तो इन्हीं नामों में से कोई शाह का उत्तराधिकारी बनेगा। अरुण सिंह धूमल और अविषेक डालमिया को आईपीएल संचालन समिति (जीसी) के लिए आम सभा (जनरल बॉडी) के प्रतिनिधि के रूप में चुना गया। धूमल का कम से कम आईपीएल 2025 तक लीग के अध्यक्ष के रूप में बने रहना तय था। आंध्र के पूर्व क्रिकेटर वी. चामुंडेश्वरनाथ को भारतीय खिलाड़ी संघ (आईसीए) द्वारा खिलाड़ियों के प्रतिनिधि के रूप में नामित किया गया था और उन्हें आईपीएल जीसी में शामिल किया गया था। एजेंडे में सचिव चुनाव नहीं होने के कारण एजीएम का मुख्य मसौदा आईसीसी बैठकों में भारत के दो प्रतिनिधियों का नाम तय करना था। वर्तमान में शाह आईसीसी बोर्ड में बीसीसीआई के प्रतिनिधि हैं और आईपीएल अध्यक्ष अरुण धूमल मुख्य कार्यकारी समिति में हैं। एजीएम ने सामान्य निकाय के सदस्यों को पदों के लिए जल्द ही दो नामों (निदेशक और वैकल्पिक निदेशक) की सिफारिश करने का काम सौंपा हैं क्योंकि आईसीसी ने आगामी महिला टी20 विश्व कप के फाइनल के ठीक बाद दुबई में एक सम्मेलन भी निर्धारित किया है।

ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों ने इस भारतीय को सबसे ज्यादा स्लेज करने वाला क्रिकेटर बताया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच नवंबर से बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी की शुरुआत होने जा रही है। हालांकि, पांच मैचों की इस टेस्ट सीरीज के लिए अभी से ही चर्चा शुरू हो गई है। ऑस्ट्रेलियाई

खिलाड़ियों की ओर से लगातार बयानबाजी हो रही है। इसी कड़ी में ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ियों ने सबसे ज्यादा स्लेज करने वाले भारतीय खिलाड़ी का नाम बताया है। हालांकि, उन्होंने विराट कोहली का नाम नहीं लिया है। दरअसल, पिछले कुछ वर्षों में भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच मैचों में काफी स्लेजिंग देखने को मिली है। भारतीय खिलाड़ियों ने कंगारुओं का ऑनफील्ड मुंहतोड़ जवाब दिया है। यही वजह है कि बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी पर फिलहाल भारत का कब्जा है।

श्रीलंका के प्रदर्शन में सुधार के बाद सनथ जयसूर्या जारी रखेंगे मुख्य कोच की भूमिका सामने आई जानकारी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। क्रिस सिल्वरवुड के जून के अंत में जाने के बाद श्रीलंका क्रिकेट ने मुख्य कोच पद के लिए विज्ञापन जारी किया था। जयसूर्या के नेतृत्व में टीम के प्रदर्शन में सुधार के बाद बोर्ड ने जयसूर्या को लंबी अवधि के लिए जिम्मेदारी देने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। श्रीलंका के पूर्व खिलाड़ी सनथ जयसूर्या का मुख्य कोच के रूप में करार एक साल के लिए बढ़ाया जा सकता है। श्रीलंका टीम ने पिछले कुछ महीनों में सफलता हासिल की है, जिसके बाद श्रीलंका क्रिकेट उनका कार्यकाल बढ़ाने पर विचार कर रहा है। श्रीलंका ने भारत को वनडे सीरीज में हराया, इंग्लैंड के खिलाफ द ओवल में टेस्ट मैच जीता और अब न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू टेस्ट सीरीज में ग्रीन स्वीप किया।

जीलैंड के खिलाफ हार के बाद इन्हें मिला बेस्ट फील्डर का अवॉर्ड, सम्मानित होकर हुईं भावुक

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। महिला टी20 विश्व कप 2024 में शुक्रवार को भारत को न्यूजीलैंड के खिलाफ हार का सामना करना पड़ा। 161 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए भारतीय टीम 19 ओवर में 102 रन पर सिमट गई। इस मैच में काफी विवाद भी हुए। इस हार ने टीम इंडिया के लिए आगे की राह कठिन कर दी है। हालांकि, भारतीय खिलाड़ियों का हौसला नहीं टूटा है और ड्रेसिंग रूम में खिलाड़ी बेहद प्रेरित नजर आए। बीसीसीआई ने मैच के बाद का एक वीडियो शेयर किया है। इसमें पुरुष क्रिकेट टीम द्वारा शुरू की गई बेस्ट फील्डर का अवॉर्ड देने की प्रथा को जारी रखा गया है। हालांकि, जिस खिलाड़ी को सम्मानित किया गया, वह इसे पाकर भावुक हो गईं। आइए जानते हैं वीडियो की शुरुआत में टीम इंडिया के फील्डिंग कोच मुनीश बाली ड्रेसिंग रूम में भारतीय खिलाड़ियों को संबोधित करते दिख रहे हैं। इस दौरान वह उन खिलाड़ियों के नाम बताते हैं, जिन्होंने मैच के दौरान असाधारण फील्डिंग दिखाई। वह सबसे पहले स्मृति मंधाना के कैच की तारीफ करते हैं, फिर वह श्रेयांका पाटिल के कैच की भी तारीफ करते हैं। साथ ही पूजा वस्त्राकर को एक बेहतरीन फील्डर बताते हैं। इसके बाद वह अरुंधति रेड्डी की भी तारीफ करते हैं। आखिर में मुनीश कप्तान हरमनप्रीत कौर को बेस्ट फील्डर का मेडल विजेता खिलाड़ी को पहनाने कहते हैं।

पाकिस्तान के राष्ट्रीय चयनकर्ता पद से पूर्व कप्तान मोहम्मद यूसुफ ने दिया इस्तीफा, जानें क्या रहा कारण

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। यूसुफ पिछले साल से विभिन्न भूमिकाओं में पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) से जुड़े हुए हैं। वह उस राष्ट्रीय चयन समिति का हिस्सा

थे जिसमें दो पूर्व टेस्ट खिलाड़ी, मुख्य कोच, कप्तान और एक विश्लेषक शामिल हैं। पाकिस्तान के पूर्व कप्तान मोहम्मद यूसुफ ने रविवार को राष्ट्रीय चयनकर्ता पद से इस्तीफा दे दिया है। युसूफ इस साल जून में अमेरिका और वेस्टइंडीज में खेले गए टी20 विश्व कप टीम चयन समिति का हिस्सा थे। पाकिस्तान का प्रदर्शन इस वैश्विक टूर्नामेंट में काफी निराशाजनक रहा था और टीम ग्रुप चरण से आगे बढ़ने में विफल रही थी। इस साल जुलाई में उन्हें और असद शफीक को चयन समिति में बरकरार रखा गया था। यूसुफ ने एक्स पर लिखा, मैं व्यक्तिगत कारणों से पाकिस्तान क्रिकेट टीम के चयनकर्ता के रूप में अपने इस्तीफे की घोषणा करता हूं। इस बेहतरीन टीम की सेवा करना मेरे लिए शानदार रहा है। मुझे पाकिस्तान क्रिकेट के विकास और सफलता में योगदान देने पर गर्व है। मुझे अपने खिलाड़ियों की प्रतिभा और जज्बे पर बहुत भरोसा है। यह टीम बेहतर होने के अपने प्रयास को जारी रखेगी और मैं टीम को शुभकामनाएं देता हूं। यूसुफ पिछले साल से विभिन्न भूमिकाओं में पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) से जुड़े हुए हैं। वह उस राष्ट्रीय चयन समिति का हिस्सा थे जिसमें दो पूर्व टेस्ट खिलाड़ी, मुख्य कोच, कप्तान और एक विश्लेषक शामिल हैं। यूसुफ ने पिछले दो वर्षों में राष्ट्रीय सीनियर टीम के बल्लेबाजी कोच और पाकिस्तान अंडर -19 टीम के मुख्य कोच के रूप में भी काम किया है। वह पाकिस्तान क्रिकेट के लिए एक अनिश्चित काल में चयनकर्ता रहे हैं जहां चयन समिति और इससे जुड़ी प्रणाली को बार-बार बदला गया है। इस वर्ष चयन समिति और प्रणाली में कम से कम दो बार बदलाव हुए हैं। पीसीबी अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने इस साल मार्च में पुनर्गठित पुरुषों की राष्ट्रीय चयन समिति की घोषणा की। इसमें सात सदस्य होंगे जिनमें से प्रत्येक के पास समान अधिकार होंगे और चयन से जुड़ा फैसला बहुमत के आधार पर होगा। यूसुफ के करीबी एक सूत्र ने कहा कि यह पूर्व बल्लेबाज अपनी आलोचनाओं से खुश नहीं था। उन्हें सबसे ज्यादा निराशा पीसीबी के हितधारकों और जूनियर खिलाड़ियों से मिली आलोचना से हुई। सूत्र ने कहा, वह मीडिया और सोशल मीडिया पर नियमित रूप से आलोचना किए जाने से असहज थे और उन्हें लगा कि उनके लिए सिर्फ कोचिंग पर ध्यान केंद्रित करना अच्छा होगा।

बांग्लादेश ने भारत के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए टीम घोषित की, मेहदी हसन की टीम में वापसा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। भारत और बांग्लादेश के बीच पहला टी20 मैच छह अक्तूबर

को ग्वालियर में खेला जाएगा। इसके बाद शेष दो मुकाबले नौ और 12 अक्तूबर को क्रमशः दिल्ली और हैदराबाद में होंगे। भारत ने भी इस सीरीज के लिए शनिवार को सूर्यकुमार यादव की अगुआई में टीम घोषित की थी। बांग्लादेश ने छह अक्तूबर से भारत के खिलाफ होने वाली टी20 सीरीज के लिए रविवार को टीम घोषित कर दी है। बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड (बीसीबी) ने इसके लिए मेहदी हसन मिराज को टीम में जगह दी है जिनकी 14 महीनों के बाद बांग्लादेश टीम में वापसी हुई है। मेहदी इस साल टी20 विश्व कप में भी नहीं खेले थे और उन्होंने आखिरी बार जुलाई 2023 में अफगानिस्तान के खिलाफ द्विपक्षीय सीरीज खेली थी। बांग्लादेश ने इस सीरीज के लिए अच्छा स्पिन आक्रमण शामिल किया है जिसमें मेहदी, रकीबुल हसन और रिशाद हुसैन शामिल हैं। विश्व कप में नहीं खेलने के बाद बाएं हाथ के स्पिनर रकीबुल और बाएं हाथ के बल्लेबाज परवेज हुसैन इमोन की भी टीम में वापसी हुई है। दिसंबर 2020 में परवेज ने बंगबंधु टी20 कप में 42 गेंदों पर शतक जड़ा था। हालांकि, उन्होंने अब तक सिर्फ तीन टी20 मैच खेले हैं। दूसरी तरफ, रकीबुल 2020 अंडर-19 विश्व कप में बांग्लादेश की टीम में शामिल थे। उन्होंने 2022 में जूनियर टीम का भी प्रतिनिधित्व किया था। पिछले साल एशियाई खेलों के दौरान डेब्यू करने वाले रकीबुल ने तीन टी20 मैच खेले हैं। नजमुल हुसैन शांतो इस 15 सदस्यीय टीम की अगुआई करेंगे जिसमें तौहीद हृदोय और तंजिद हसन तमीम जैसे युवा खिलाड़ी भी शामिल हैं। भारत और बांग्लादेश के बीच पहला टी20 मैच छह अक्तूबर को ग्वालियर में खेला जाएगा। इसके बाद शेष दो मुकाबले नौ और 12 अक्तूबर को क्रमशः दिल्ली और हैदराबाद में होंगे। भारत ने भी इस सीरीज के लिए शनिवार को सूर्यकुमार यादव की अगुआई में टीम घोषित की थी। भारत के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए बांग्लादेश की टीम इस प्रकार है...नजमुल हुसैन शांतो (कप्तान), तंजीद हसन तमीम, परवेज हुसैन इमोन, तौहीद हृदोय, महमूदुल्लाह, लिटन कुमार दास, जाकिर अली अनिक, मेहदी हसन मिराज, महेदी हसन, रिशाद हुसैन, मुस्तफिजुर रहमान, तस्कीन अहमद, शोरफुल इस्लाम, तंजीम हसन साकिब , रकीबुल हसन।

राशिफल

मेष-:स्वास्थ्य संबंधी समस्या निकट है, इसलिए नियमित व्यायाम को दिनचर्या में शामिल करें और विश्वास करें कि इलाज से पहले सावधानी बरतना बेहतर है।

वृष- सप्ताह आपके लिए मंगलमय रहेगा। आपके रचनात्मक कार्यों में नाम होगा और आपको प्रसिद्धि भी मिलेगी। आप अपने मन के अनुसार निर्णय लेंगे।

मिथुन-: भावनात्मक रहेगा. आप खुद को अपनी अंतरतम भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने की स्थिति में भी पा सकते हैं। घरेलू काम थकाने वाले होंगे।

कर्क-:जीवनसाथी का प्यारा व्यवहार आपका दिन खुशनुमा बना सकता है. अपने ख़र्चों पर नियंत्रण रखें से खर्च करने से बचें। भावनात्मक रूप से जोखिम उठाना आपके पक्ष में जाएगा।

सिंह-: आप जिस काम को पूरा करना चाहते हैं वह आसानी से पूरा हो जाएगा. किसी महत्वपूर्ण कार्य के पूर्ण होने पर बधाई देने के लिए लोगों का आना-जाना रहेगा।

कन्या-: आप सभी परेशानियों और चिंताओं को पीछे छोड़कर अपने परिवार के साथ कुछ समय बिताना चाहेंगे आपका जाता हुआ दिखाई देगा जिसके बारे में आपने सोचा भी नहीं होगा।

तुला-:किसी मित्र की उदासीनता आपको परेशान करेगी. लेकिन अपने आप को शांत रखें। इसे समस्या न बनने दें और इससे बचने की कोशिश करें।

वृश्चिक-: भाग्य आपका पूरा साथ देगा। जिन चीजों के लिए आप लंबे समय से प्रयास कर रहे थे, वो पूरी होने वाली हैं। जो प्रयास आपने अपनी ओर से व्यर्थ समझे थे।

धनु-: भौतिक सुख-सुविधाओं की ओर रुझान बढ़ेगा. जीवनसाथी के साथ वैचारिक मतभेद रहेंगे। आत्मबल में वृद्धि होगी। पारिवारिक समस्याओं से विचलित हो सकता है।

मकर-:खुद पर हद से ज्यादा दबाव न डालें और पर्याप्त आराम करें. रियल एस्टेट से जुड़े निवेश आपको अच्छा मुनाफा देंगे। आपका अडियल रवैया घर में लोगों का दिल दुखा सकता है।

कुंभ-: आपका झुकाव अध्यात्म की ओर रहेगा, मंदिर जाने या कोई धार्मिक कार्यक्रम आयोजित करने की योजना बना सकते हैं. आज आपको खुशी पाने के लिए अपने स्वभाव में थोड़ा लाने की जरूरत है।

मीन-: आपको कार्यक्षेत्र में सुख-समृद्धि की प्राप्ति होगी. परिवार और जीवन साथी का सहयोग मिलने की संभावना है। हालांकि छात्रों को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए थोड़ी अधिक मेहनत करनी पड़

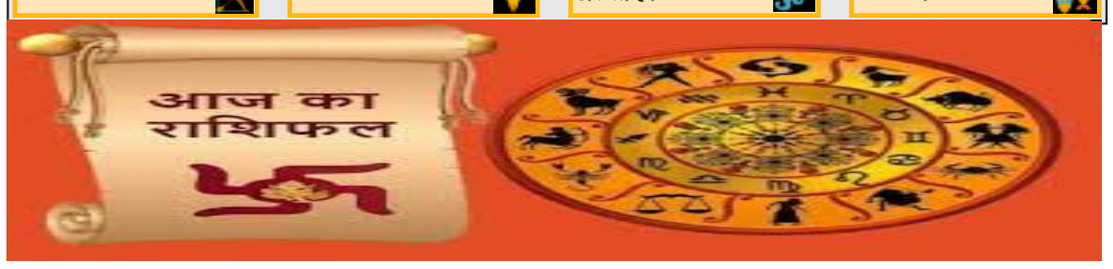

खिलाड़ियों को रिटेन करने के लिए फ्रेंचाइजी को मिलेगा इतना वक्त, सामने आई डेडलाइन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। शीर्ष परिषद ने आईपीएल फ्रेंचाइजी को पिछली टीमों में से अधिकतम छह खिलाड़ियों को रिटेन करने की अनुमति दी है। इसमें नीलामी में एक राइट टू मैच (आरटीएम) कार्ड भी शामिल होगा। आईपीएल 2025 सीजन से पहले होने वाली बड़ी नीलामी को देखते हुए रिटेंशन नियम पर फैसला हो गया था। अब जानकारी सामने आ रही है कि आईपीएल टीमों के पास नीलामी से पहले खिलाड़ियों को रिटेन करने के लिए डेडलाइन तय कर दी गई है। ईएसपीएनक्रिकइंफो की रिपोर्ट के अनुसार, टीमों के पास खिलाड़ियों को रिटेन करने के लिए 31 अक्तूबर तक का समय है। नीलामी से पहले शीर्ष परिषद की बैठक शनिवार को बेंगलुरु में हुई थी। इस बैठक में रिटेंशन सहित कई अन्य मुद्दों पर निर्णय लिया गया था।शीर्ष परिषद ने आईपीएल फ्रेंचाइजी को पिछली टीमों में से

अधिकतम छह खिलाड़ियों को रिटेन करने की अनुमति दी है। इसमें नीलामी में एक राइट टू मैच (आरटीएम) कार्ड भी शामिल होगा। कोई भी फ्रेंचाइजी छह में से भारतीय और विदेशी मिलाकर अधिकतम पांच कैप्ड खिलाड़ी और अधिकतम दो अनकैप्ड खिलाड़ी रिटेन कर सकेगी। यानी अगर किसी टीम ने पांच कैप्ड खिलाड़ी लिया है तो उसे छठा खिलाड़ी अनकैप्ड रिटेन करना होगा। शीर्ष परिषद की बैठक में यह भी फैसला किया गया था कि यदि कोई भारतीय खिलाड़ी पिछले पांच कैलेंडर वर्षों में राष्ट्रीय टीम के लिए नहीं खेला है तो उसे अनकैप्ड खिलाड़ी माना जाएगा। आईपीएल के अनुसार, अगर कोई कैप्ड भारतीय खिलाड़ी संबंधित सीजन के आयोजन से पहले के पिछले पांच कैलेंडर वर्षों में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट (टेस्ट मैच, वनडे, टी20 अंतरराष्ट्रीय) में शुरुआती एकदाश में नहीं खेला है या उसके पास बीसीसीआई के साथ केंद्रीय अनुबंध नहीं है, तो वह अनकैप्ड हो जाएगा। यह नियम सिर्फ भारतीय खिलाड़ियों के लिए लागू होगा। रिटेंशन में अगर कोई खिलाड़ी 31 अक्तूबर से पहले अंतरराष्ट्रीय डेब्यू कर लेता है तो उसको कैप्ड माना जाएगा, लेकिन अगर कोई रिटेन हुआ अनकैप्ड खिलाड़ी नीलामी से एक दिन पहले भी अंतरराष्ट्रीय डेब्यू करता है तो उसको अनकैप्ड ही माना जाएगा।

ADHUNIK TUTORIALS

" FOR THE STUDENTS, FROM A STUDENT "

FOR CLASSES 1st 5th

(ADMISSION OPEN)

FACILITIES

- Air Conditioned & Well Furnished Classroom
- Water Cooler Available
- Hygienic Washrooms
- CCTV for Safety Purposes
- In Campus Parking

Dr. (Er)PuneetArora (HON. DIRECTOR)
(B.Tech, M. Tech, MBA , Ph.D)
Awarded with ' Young Scientist & Best Teachers, Author of Many Books Chapters, Research Paper, Patent & Trademarks

Ms.Nilanjana Arora (Assistant Director)

- Ex. Student of Bethany Convent School, Bishop Johnson School & College, Girl's High School & College
- Pursuing B.Tech
- Awarded by TCS
- Certification in the Field of Web Development and Machine Learning .

Ms. Riya Arora (Counsellor)

- Ex. Student of Delhi Public School.
- Subject Topper of Delhi Public School
- Pursuing LLB from University of Allahabad .

Address: B-Block, ADA Colony, Mtek Campus, Naini, Prayagraj .

Contact :- Call and Whatsapp: 8542919234

DURGAWATI INTERNATIONAL SCHOOL
DURGAWATI GROUP INSTITUTIONS

DURGAWATI INTERNATIONAL

School & College Meja, Prayagraj

(AFFILIATED TO NEW DELHI I.C.S.E. (AFFILIATION No. UP 481)

Good News Good News

THE STUDENTS SCORING ABOVE 95% IN THE ENTRANCE EXAM ARE AWARDED WITH THE CONCESSION IN THE ENTIRE TUITION FEES OF THE WHOLE YEAR 2024-25 HURRY UP!!

HOSTEL FACILITY

- AC hostel facilities are available for the boys from class 3rd onwards.
- Quality food
- Personal care
- 24/7 power backup
- Special tuition classes for hostelers
- Free health checkup per month.
- Infirmary faciliti is also available
- Well equipped laboratories and digital Library

पहले 50 छात्रों के प्रवेश शुल्क पर 100% की छूट

Admissions OPEN

PG to IX, XI

(AFFILIATED TO NEW DELHI ICSE (AFFILIATION No. UP 481)

SCHOOL FACILITIES

- Affordable fee & High-tech infrastructure.
- Spacious and colorful classrooms.
- Trained teachers from Kerala & Prayagraj.
- Free personality development.
- English spoken classes for each student.
- RO water and CCTV facilities.
- Pick and drop facilities with full safety.
- Trained PE Teacher along with
- Spacious playground

Manager
Dr. (Smt.) Swatantra Mishra
(Psychologist)

Email : www.disaldd@gmail.com Durgawati International School
Call For Any Enquiry 7505561664
Contact No.: 7081152877, 7652002511, 9415017879

श्रीरामलीला की तैयारियाँ जोरों से हुई शुरू

(आधुनिक समाचार नेटवर्क)

नोएडा। श्रीराम मित्र मंडल नोएडा रामलीला समिति द्वारा सेक्टर 62 के रामलीला मैदान में रामलीला मंचन की तैयारियां तेज़ी से स्शुरू हो गईं हैं।मंच का निर्माण कार्य शुरू हो गया है। मंचन के स्थान को चारों तरफ़ से घेरा जा रहा है।इस बार डेढ़ सौ फ़ीट लंबा मंच बनाया जा रहा है।मंच की ऊंचाई 6 फ़िट होगी और चौड़ाई 48 होगी।इस वर्ष तीन मंच बनाया जा रहा।श्रीराम मित्र मंडल नोएडा रामलीला समिति के महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा ने बताया कि इस वर्ष रामलीला का मंचन बहुत रोचक और बहुत रोमांचक होगा । श्री जानकी कला मंच के कलाकारों के द्वारा रामलीला की भव्य प्रस्तुति दी जाएगी ।सुरक्षा व्यवस्था चाक चौबंद रहेगी।लोगों के बैठने की व्यवस्था को भी बढ़ाया गया है।इस बार 5 हज़ार लोगों के बैठने की व्यवस्था है ।

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक डा. दीपक अरोरा द्वारा श्री आधुनिक प्रिन्टर्स एण्ड पैकेजर्स प्रा.लि. 1-मिर्जापुर रोड नैनी प्रयागराज उ.प्र. 211008 से मुद्रित एवं एम2ए/25एडीए कालोनी नैनी प्रयागराज 211008 (उ.प्र.) से प्रकाशित
सम्पादकः-डा. दीपक अरोरा
मो0न0 09415608783
RNI No. UPHIN/2012/41154
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।